"एक अनूठी सामाजिक, आध्यात्मिक, पर्यावरणीय व साहित्यिक मासिक पत्रिका"

अमर ज्योति

फाल्गुन मेले की
हार्दिक शुभकामनाएं

वर्ष 63 ◆ अंक 2

फरवरी, 2012

अमर ज्योति का ज्ञान दीप अपने घर आंगन में जलाइये

संपादक

डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

व्यवस्थापक

सिकन्दर जौहर

Mob.: 9996472685

सभा कार्यालय

Tel.: 01662-225804

E-mail : editor@amarjyotipatrika.com
info@amarjyotipatrika.com

Website : www.amarjyotipatrika.com

इस पत्रिका में व्यवस्थापक के अतिरिक्त उल्लेखित सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ हैं।

वार्षिक सदस्यता शुल्क : ₹ 50

आजीवन सदस्यता शुल्क : ₹ 500

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें।"

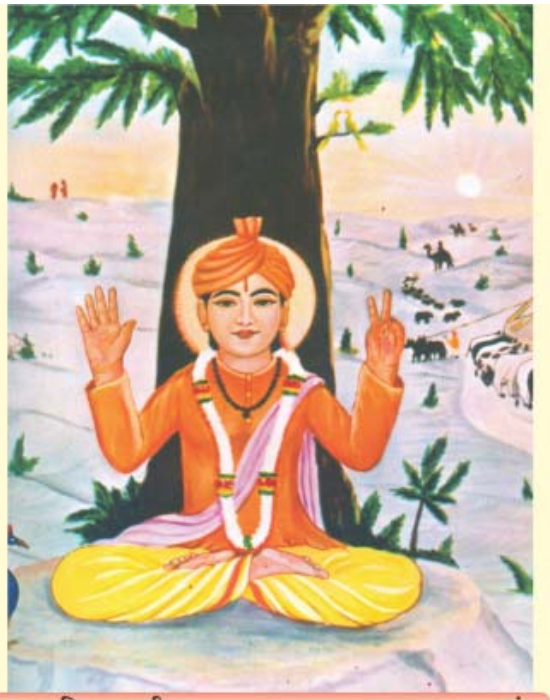

क्र.	विषय सूची	पृष्ठ सं.
1.	सम्पादकीय	1
2.	सबद -5	2
3.	धर्म मार्ग की शिक्षा और उनका आचरण	4
4.	सम्बन्धी, किस पर नाराज.....	7
5.	बिश्नोई पंथ परिचय-1	8
6.	सुख में सुमिरन जो करे....	9
7.	संघर्ष, बेटी	10
8.	कलयुग में विष्णु दर्शन	11
9.	सबदवाणी में गुरु महिमा	12
10.	मेरे अपने (लघु कथा)	14
11.	भजनलाल पच्चीसी	15
12.	बधाई संदेश	16
13.	सामाजिक क्षति	17
14.	पाठकों की कलम से.....	18
15.	बिश्नोई मन्दिर फलावदा	19
16.	भजन, सामाजिक बुराई-नशा	20
17.	धर्म हुवै पापां छूटीजै, क्या मिला?	21
18.	दिशाहीन होता युवा समाज	22
19.	समय की मांग : बेटा-बेटी एक समान	23
20.	जीवन में नया प्रकाश, धर्म क्या है?	24
21.	प्रभु भक्ति बिन जीवन सूना	25
22.	क्या बिना जीव हत्या.....	26
23.	मृत्युभोज : कैसी उल्टी रीति?	27
24.	माँ, गम को बदलो खुशी में	28
25.	संभराथल धारा (पत्रिका परिचय)	29
26.	हलचल	30

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

सम्पादकीय...

संस्कृति के संवाहक मेले

भारतीय संस्कृति की पहचान है- उत्सवधर्मिता व आध्यात्मिकता। यही कारण है कि भारतीय समाज में विभिन्न पर्वों-उत्सवों व धार्मिक आयोजनों की धूम रहती है। इन पर्वों-उत्सवों व धार्मिक आयोजनों की यह विशेषता होती है कि ये आह्लादकारी होने के साथ-साथ अध्यात्मोन्मुख होते हैं। यहां प्रत्येक पर्वोत्सव अपना विशेष व गहन अर्थ भी रखता है। इन पर्वोत्सवों व धार्मिक आयोजनों में ये विभिन्न स्थानों व अवसरों पर आयोजित होने वाले मेले अपना उल्लेखनीय स्थान रखते हैं। जांभाणी संस्कृति में तो मेलों का सर्वाधिक महत्त्व है। वर्ष भर में अनेक जांभाणी धामों पर विशेष अवसरों पर मेले आयोजित होते हैं। इन मेलों में मुक्तिधाम मुकाम में फाल्गुन व आसोज की अमावस्या को आयोजित होने वाले दो विशाल मेले वस्तुतः राष्ट्रीय सतर के होते हैं। इन मेलों में भारत के कौने-कौने में बसने वाले बिश्नोईजन गुरु जम्भेश्वर भगवान के चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करने आते हैं। ये दोनों मेले सही अर्थों में बिश्नोई संस्कृति के महाकुंभ हैं।

जांभाणी मेले मात्र आध्यात्मिक महत्त्व नहीं रखते अपितु हमारी संस्कृति के संवाहक हैं व सामाजिक संगठन के आधार हैं। इन मेलों में पहुंच हम हमारी परम्परा, रीति-रिवाज, मान्यताओं, वेशभूषा, पूजा पद्धति आदि का न केवल साक्षात् दर्शन करते हैं अपितु इनके विषय में गहन विचार-विमर्श भी करते हैं। इन मेलों में जाने से जहां हमारे हृदय में उत्साह का संचार होता है वहीं बुद्धि में चिंतन एवं आत्मा में आध्यात्मिकता का विकास होता है। विभिन्न क्षेत्रों के लोग एक स्थान पर इकट्ठे होते हैं, जहां उनमें विचारों का परस्पर आदान-प्रदान भी होता है। इन मेलों में जहां आपसी भाईचारा बढ़ता है वहीं सामाजिक संगठन भी मजबूत होता है।

वस्तुतः जांभाणी संस्कृति के जीवित रहने एवं इसकी गतिशीलता में जांभाणी मेलों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। खेद का विषय है कि आजकल मेलों में भीड़ तो निरन्तर बढ़ती जा रही है परन्तु अनुशासन एवं श्रद्धाभाव में कुछ कमी सी आ गई है, जो शुभ संकेत नहीं हैं। आज मेले जाना एक औपचारिकता सी बन गई है। इसका कारण यह है कि हम इन मेलों के पीछे छिपे मूल उद्देश्य को भूलते जा रहे हैं। ये मेले बहुत से उद्देश्यों को अपने में समेटे रहते हैं। इन उद्देश्यों की पूर्ति तभी हो सकती है जब हम पूर्ण श्रद्धाभाव से मेले में जाएं, वहां जाकर दिखावे से दूर रहकर आत्मानुशासन का परिचय दें, रात्रि सत्संग में अवश्य जाएं, सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेकर सामाजिक प्रगति को जानें, अपनी संस्कृति व रीति-रिवाजों को जानें-पहचानें व अपनाएं। मेले में जाकर इन सब उद्देश्यों से भटकना समय व धन की बर्बादी है। इसी आशा के साथ फाल्गुन मेले 2012 की हार्दिक शुभकामनाएं कि मेले के मर्म को समझकर ही हम मेले जाएंगे।

गुरुवाणी

सबद – 5

उधरण कान्हावत यूं कहै, जाम्भाजी सूं बात।
जाप कुणा रो थे जपो, हमें बताओं तात।

कान्हाजी के पुत्र उधरण ने इससे पूर्व शब्द द्वारा आयु का ज्ञान प्राप्त कर के फिर दूसरा प्रश्न पूछा कि हे देव ! आप जप किस का करते हैं, हमें भी बतलायें कि हम किस देवता का जप–नाम स्मरण उपासना करें। गुरू जाम्भोजी ने शब्दोच्चारण इस प्रकार से किया –

ओ३म् अइयालो अपरंपर बाणी,
महे जपां न जाया जीऊं।

हे संसार के लोगों ! मेरी बाणी अपरंपर है अर्थात् तुम लोग जिनकी परंपरा से उपासना करते आये हो और अब भी कर रहे हो, ऐसी परंपरा वाली उपासना मैं नहीं करता। आप लोगों ने जिस परम तत्त्व की कभी कल्पना भी नहीं की होगी, जो लोगों की सामान्य वाणी से परे है। केवल योगी लोगों द्वारा अनुभव गम्य है, उसी परम देव की मैं मन वचन कर्म से उपासना तथा जप करता हूं और आप लोग भी उसी की उपासना करो। हमारे जैसे पुरूष कभी भी जन्में हुए जीवों की उपासना जप नहीं करते यदि आप लोग करते हैं तो छोड़ दीजिये। जन्मा जीव तो स्वयं असमर्थ है, कमजोर व्यक्ति दूसरे की क्या सहायता कर सकता है।

नव अवतार नमो नारायण, तेपण रूप हमारा थीयूं।

परम सत्तावान भगवान विष्णु के ही नवों अवतार हुए हैं, ये नव अवतार–मच्छ, कच्छ, वाराह, नृसिंह, बावन, परशुराम, राम–लक्ष्मण, कृष्ण तथा बुद्ध इत्यादि। ये नवों अवतार ही नमन करने योग्य हैं, इनसे अतिरिक्त अन्य जन्मा जीव उपास्य नहीं है तथा ये नवों अवतार श्री जाम्भोजी कहते हैं कि मेरे ही स्वरूप है। देश काल, शरीर से भिन्न होते हुए भी तत्व रूप से तो मैं और नवों अवतार एक ही है।

जपी तपी तक पीर ऋषेश्वर,
कांय जपीजै तेपण जाया जीऊं।

अब आगे जन्मे हुए जीवों को बता रहे हैं, जिनका जप लोग किया करते हैं, उनमे यती, तपस्वी, तकिये पर रहने वाले फकीर, ऋषि, मण्डलेश्वर, इत्यादि जन्मे जीव हैं। हे लोगों ! इनका जप क्यों करते हो ?

खेचर भूचर खेत्र पाला परगट गुप्ता,
कांय जपीजै तेपण जाया जीऊं ।

आकाश में विचरण करने वाले, धरती पर रहने वाले, खेत्रपाल, भोमियां इत्यादि कुछ तो प्रगट तथा कुछ गुप्त इन्हें आप क्यों जपते हैं ये तो जन्मे हुए जीव हैं।

वासग शेष गुणिदां फुणिदां,
कांय जपीजै तेपण जाया जीऊं ।

वासुकि नाग, शेषनाग, मणिधारी, गुणवान तथा फणधारी, नागराज ही क्यों न हों ये सभी जन्में हुए जीव है इसलिये जप करने के योग्य नहीं है फिर इनके नीचे पड़ कर धोक क्यों लगाते हो ?

चौषट जोगनी बावन भैरूं,
कांय जपीजै तेपण जाया जीऊं ।

चौंसठ प्रकार की योगनियां तथा बावन प्रकार के बीर – भैरव जो देहातों में अब भी पूजे जाते हैं ये सभी जन्म–मरण धर्मा सामान्य जीव है इनकी आराधना सदा ही वर्जनीय है, आप लोग क्यों भोपों–पुजारियों के चक्कर में पड़ कर धन, बल, समय, व्यर्थ में ही बरबाद करते हो।

जपां तो एक निरालंभ शिम्भूं, जिहिं के माई न पीऊं ।

एक निराकार निरालंभ, निरंजन, स्वयंभूं का ही हम तो जप करते हैं जिनके न तो कोई माता है और न ही कोई पिता ही है तथा जो सर्वाधार सर्वशक्तिमान है और वह सभी के माता–पिता भाई–बन्धु सभी कुछ है।

न तन रक्तूं न तन धातूं, न तन ताव न सीऊ।

एक मात्र समादरणीय वह तत्व साकार रूप धारण करके सर्वसृष्टि की रचना करता है। मृत्यु से स्वयं तो रहित है किन्तु सभी जीवों का एक मूल स्थान है। वहीं

से जीवों का उद्‌गम होता है, अन्त में वहीं जाकर जीव विलीन हो जाते हैं। ऐसे परम तत्व मूल को खोजना चाहिये, प्राप्त करना चाहिये।

सर्व सिरजत मरत विवरजत, तास न मूल ज लेणा कीयों।

एकमात्र समादरणीय वह तत्व साकार रूप धारण करके सर्वसृष्टि की रचना करता है। मृत्यु से स्वयं तो रहित है किन्तु सभी जीवों का एक मूल स्थान है। वहीं से जीवों का उद्‌गम होता है, अन्त में वहीं जाकर जीव विलीन हो जाते हैं। ऐसे परम तत्त्व मूल को खोजना चाहिए, प्राप्त करना चाहिए।

अइयालों अपरंपर बाणी, महे जपां न जाया जीऊं।

इसीलिये हे लोगो! मेरा मार्गकुछ विचित्र है किन्तु सत्य सनातन है, संसार की लीक से हटकर होने से आश्चर्य नहीं करना। अत: मैं जन्में जीवों का जप नहीं करता। जो स्वयं फंसे हैं वे दूसरों को कैसे मुक्ति दिला सकते हैं?

साभार- जंभसार

प्रिय पाठको!

अमर ज्योति आपके सकारात्मक सहयोग व मार्गदर्शन से निरन्तर उन्नति के पथ पर अग्रसर है तथा इसकी गणना हिन्दी की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में होती है। बिश्नोई समाज से बाहर भी इसके हजारों पाठक हैं। यह भारत के अनेक पुस्तकालयों में जाती है। आज यह पत्रिका समाज के मुखपत्र के रूप में स्थापित हो चुकी है। इसी पत्रिका में हम समाज की उत्कृष्ट प्रतिभाओं से परिचय करवाने के लिए व उनको प्रोत्साहित करने के लिए बधाई संदेश प्रकाशित करते हैं, जिसमें उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त करने वाली प्रतिभा का चित्र व परिचय प्रकाशित होता है। हमारा यह मानना है कि इसमें केवल ऐसी प्रतिभाओं का ही प्रकाशन हो जिनकी उपलब्धि वास्तव में उल्लेखनीय हो और वह दूसरों के लिए प्रेरक हो। इसके साथ ही इसमें यह भी आवश्यक है कि इनके प्रकाशन में पूर्ण पारदर्शिता रहे। उपर्युक्त दोनों बातें तभी संभव है जब 'बधाई संदेश' कालम के लिए एक स्पष्ट नियमावली बने। हम समाज के शिक्षाविदों व बुद्धिजीवियों से विचार विमर्श करके इस कॉलम के लिए नियमावली तैयार कर रहे हैं जिसे तैयार होने पर अमर ज्योति में प्रकाशित भी किया जायेगा। आपसे अनुरोध है कि आप भी इस विषय में अपने सुझाव हमें भेजें। शिक्षा, खेल, नौकरी, सम्मान, राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्र में उपलब्धि प्राप्त करने वाली किस स्तर की प्रतिभाओं का प्रकाशन किया जाना चाहिए ताकि पत्रिका व समाज की प्रतिष्ठा बनी रहे। इसी विषय के आलोक में अपने विचार अमर ज्योति कार्यालय में या ईमेल पर भेजें।

-सम्पादक

लेखकों से अनुरोध है कि..

गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी जून का अंक पर्यावरण अंक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा। पर्यावरण से सम्बन्धित लेख, कविता, गीत, कहानी इस अंक हेतु आमन्त्रित हैं। आपकी रचना व सुझाव 15 अप्रैल, 2012 तक अमर ज्योति कार्यालय में पहुंच जाने चाहिए। आप अपनी रचना Kruti Dev, AAText फोंट में टाईप करके भी भेज सकते हैं। हमारा ईमेल पता : editor@amarjyotipatrika.com, info@amarjyotipatrika.com

सम्पादक

धर्म मार्ग की शिक्षा और उनका आचरण

जो सभी प्राणियों का पालन-पोषण करता है और समाज को सद्मार्ग बताता है उसे धर्म कहते हैं। धर्म का अर्थ मानव समाज के नियमन एवं अवस्था के अनुरूप जीवन-यापन, कर्त्तव्य, धर्म तथा अचार विचार के नियम आदि का मार्ग धर्म के अंतर्गत प्रशस्त किया गया है। धर्म मानव भक्ति है। मानव भक्ति एक साधना है। एक अलग मार्ग है जिस पर संकीर्ण विचार वाले लोग नहीं चल पाते हैं। भारतीय धर्म परम्परा में ज्ञान की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां संकीर्णता के लिए कोई स्थान नहीं है। हमारे ऋषियों मुनियों और विद्वानों ने सदैव देश के लिए पूरे संसार को सामने रखकर निष्कर्ष निकाले हैं। वसुधैव कुटुंबकम् का चिंतन न सिर्फ आज के लिए था और न स्वार्थ के लिए। स्वार्थ और आदर्श साथ-साथ नहीं चल सकते। परम्परा और आधुनिकता को लेकर कई बार अतिवादी दृष्टिकोण दिखाई पड़ते हैं। कभी परम्परा के नाम पर संकीर्णता और अंधविश्वास सामने आता है। कभी आधुनिकता के नाम पर मूल्यहीनता दिखाई पड़ती है। दोनों ही धारणाएं सही नहीं हैं। हमारे महापुरुषों ने हमेशा संतुलित दृष्टिकोण अपनाया है। भारतीय धर्म दर्शन परम्परा ने हमेशा संतुलित दृष्टिकोण की प्रेरणा दी है। उसमें संघर्ष है, त्याग और तपस्या है, प्राप्ति है और अप्राप्ति भी है। लेकिन सभी कुछ मानवीय, संस्कृति और नवनिर्माण के लिए है।

वर्तमान युग में समाज व देश में ज्यादातर मुश्किलें अज्ञान के कारण उत्पन्न होती हैं। ज्ञान के अभाव में विवेक नष्ट होता है। विवेक नष्ट होने से भ्रम और अंधविश्वास पैदा होता है। भ्रम से मनुष्य रास्ते से भटक जाता है। इसलिए उसको धर्म मार्ग का ज्ञान होना चाहिए। धर्म व्यक्ति व समाज को मैत्री, प्रेम, करुणा व सहिष्णुता जैसे गुण विकसित करने के साथ मानव को दिव्यता प्रदान करता है जिससे भ्रम व अज्ञान स्वत: नष्ट हो जाते हैं। धर्म बहिर्मुखी ही नहीं अंतर्मुखी भी होता है। अपने भीतर सकारात्मक विचार और ऊर्जा के जागरण का प्रयास ही धर्म है जो मानवता की ओर ले जाता है। धर्म ज्ञान, कर्म और प्रेम की त्रिवेणी है। मनुष्य की प्रधान तीन वृत्तियां सत्य, प्रेम और शक्ति है। इन तीनों के विकास द्वारा मानव की उन्नति होती है। धर्म के दस लक्षण बताए गये हैं- धृति, क्षमा, दया, चोरी न करना, मन, वाणी और शरीर की पवित्रता, इंद्रियों का संयम, सुबुद्धि, विद्या, सत्य और क्रोध न करना। इनका पालन करना मनुष्य का कर्त्तव्य है और यह कर्त्तव्य ही धर्म है।

धर्म हमें सिखाता है कि मानवता की राह पर अपनी इस विशिष्ट ऊर्जा का सकारात्मक दिशा में उपयोग करना चाहिए। धर्म का मूल उद्देश्य है प्राणी मात्र को सुखी रखना। सामाजिक पद्धति को एकसूत्र में बांधने के कारण ही उसे धर्म नाम दिया गया है जैसे धारणात धर्ममित्याहु 'धर्मो धारयति प्रजा' महर्षि कणाद ने इस लोक में उन्नति और परलोक में मुक्ति को धर्म कहा है। 'यतोऽभ्युदयनि: श्रेयसंसिद्धि: सधर्म:' अर्थात् जो कल्याणकारी है। मनुस्मृति में वेद को ही धर्म का मूल केन्द्र माना है। वेदाऽखिलो धर्ममूलम्- अर्थात् वेद ही धर्म का आधार स्तम्भ है। इसलिए वेदों में राष्ट्रधर्म और समृद्धि के अनेक मंत्र दिये गये हैं। जीवन उसी का सार्थक है जो दूसरों के लिए जीता है, उसका साथ देता है जिसके साथ अन्याय हुआ है। यह बात व्यक्ति के लिए तो सच है ही, समाज व देश तथा सारी दुनिया और सबके लिए भी सच है। सम्पूर्ण विश्व के सामने जो चुनौतियां और समस्या है उनका निवारण भारतीय ध र्म और दर्शन में है।

रामचरितमानस में तुलसीदास ने भी कहा है, "परहित सरिस धर्म नहिं भाई"। जो दूसरों के प्रति दया करता है वही व्यक्ति ईश्वर की सेवा कर रहा है। धर्म की रक्षा के लिए परहित एवं जनकल्याण के भाव समाज के हर व्यक्ति में जगाना होगा। धर्म के अभाव में

मानवता का विनाश हो जायेगा। कामनाओं एवं आकर्षण का त्याग करके ही हम आत्मबल प्राप्त कर सकते हैं। ईश्वर ने हमें चार चीजों का त्याग बतलाया है जो प्राप्त नहीं है उसकी कामना, जो प्राप्त है उसकी ममता, निर्वाह की स्पृहा और मैं ऐसा हूं- यह अहंता, जिसके कारण अपने में दूसरों की अपेक्षा विशेषता दिखलाई पड़ती है। जो व्यक्ति सम्पूर्ण कामनाओं को त्यागकर ममतारहित, अहंकाररहित और स्पृहारहित हुआ विचरता है वही शांति एवं सद्भावना को प्राप्त कर सकता है। कामना के त्याग से ही कर्मयोग सिद्ध होगा तथा भीतर से तभी शक्तिशाली बन सकेंगे और संपूर्ण मानवता को प्यार एवं सद्भावना बांट सकेंगे।

तैत्तिरीय उपनिषद् कहता है- सदा धर्म का आचरण करो। धर्म एवं आचार के पालन में प्रमाद नहीं करना चाहिए अर्थात् धर्म और आचरण भिन्न-भिन्न है, परन्तु स्मृतियों के अनुसार कहा गया है, 'आचार: प्रथम धर्म: अर्थात् धर्म का मूल आचरण है, आचरण ही परमधर्म है। मनुष्य जिस आचरण से अपने शरीर, ज्ञान एवं प्रतिष्ठा को धारण करेगा उसी से ही समाज एवं राष्ट्र सामर्थ्य एवं प्रतिष्ठा को धारण करेंगे। अत: वही आचरण धर्म होगा। सदाचार ही धर्म है। भगवान श्रीकृष्ण के अनुसार गीता जो प्रंशसनीय आचरण या कर्म सद्भावपूर्वक, वृहत्कल्याण के उद्देश्य से, ईश्वर अर्जित बुद्धि से किए जाते हैं। उनमें सत् शब्द प्रयुक्त होता है अर्थात् वे सब सद् आचरण है। आचरण व्यक्ति एवं समाज को अवश्य प्रभावित करता है क्योंकि परिवार, समाज, राष्ट्र सभी एक शृंखला की कड़ी हैं। एक व्यक्ति ही अहिंसा, सत्य, धैर्य, संयम, क्षमा, मृदुता, स्वच्छता एवं स्नेह से युक्त है उसका आचरण सूर्य की तरह प्रकाश, फूलों की तरह सुगंध एवं सुख का विस्तार करता है। वही हिंसा, काम, क्रोध, लोभ, मोह से ग्रस्त, अशांत व्यक्ति परिवार एवं समाज के लिए विपत्तियों एवं दु:ख का कारण होता है।

मनुष्य को चाहिए कि वह सदैव अपने आचरण पर ध्यान दे कि उसका आहार-विहार संतुलित हो। दूसरों के प्रति संवेदना हो। दुखियों के प्रति करुणा, सुखी के प्रति मैत्री भाव, बड़ों के प्रति आदर एवं छोटों के प्रति स्नेह हो। सभी को अहंकार रहित होकर मीठी वाणी बोलें। जरूरतमंदों की सामर्थ्य अनुसार अवश्य सहायता करें क्योंकि मनुष्य होने के नाते किसी भूखे को भोजन कराना, रोते हुए के आंसू पोंछना, किसी घायल या रोगी की सेवा करना आवश्यक है। सुंदर विचारों का सदा मनन करें तथा उन्हें प्रभावी ढंग से अवसर पर व्यक्त कर समाज को प्रेरणा दें। शुभ कार्य, ईश वंदना आदि इतनी श्रद्धा, प्रेम एवं विश्वास की वृद्धि हो। अपने आचरण से समाज में सहयोग, सद्भावना एवं शांति की वृद्धि करें। अधूरे ज्ञान एवं आडंबरपूर्ण आचरण को बोझ समझकर त्याग दें ऐसा हमारा सदाचरण ही धर्म कहलाने योग्य है।

आज देश व दुनिया के सामने अनेक चुनौतियां व समस्याएं खड़ी हैं, जिसमें आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, परमाणु युद्ध, पर्यावरण प्रदूषण, अलगाववाद, भाषावाद, क्षेत्रवाद, जातिवाद, अव्यवस्था, अराजकता, भौतिकवाद, वैमनस्य, घृणा, भ्रूणहत्या, नारी उत्पीड़न व अनेक अनैतिक समस्याओं से समाज ग्रसित होता जा रहा है। मूल्यहीनता व संस्कारहीनता लगातार बढ़ रही है। इन सभी समस्याओं का निवारण धर्म मार्ग और धर्म के आचरण से ही हो सकता है। स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि धर्म मार्ग पर चलने से ही राष्ट्र का कल्याण हो सकता है और अधर्म पर चलने से राष्ट्र का विनाश हो सकता है। इसलिए हमारे सभी धर्म ग्रंथों में, उपदेशों, उनकी वाणियों एवं कार्यों में राष्ट्र धर्म की समृद्धि की बात कही है। इसलिए राष्ट्र को समृद्ध होने के लिए सर्वप्रथम राष्ट्र स्वतंत्र होना चाहिए। 'पराधीनं वृथा जन्म' अर्थात् पराधीन होकर जीना मरने से भी बुरा है। इसलिए ऋग्वेद में कहा गया है कि 'यतेमहि स्वराज्ये' अर्थात् हम स्वराज्य के प्रति प्रयत्नवान हो। स्वतंत्रता को अक्षुण्ण रखने के लिए 'वयं राष्ट्रै जाग्रयामि पुरोहिता:' अर्थात्

हम निरंतर जागरूक प्रहरी बनकर रहें। हम जागरूक रहकर न केवल राष्ट्र से उनके नागरिकों यहां तक कि प्रत्येक वस्तु से प्यार हो, गर्व हो, जैसा भगवान राम भरत से उनके चित्रकूट आगमन पर व्यक्त करते हैं।

राष्ट्र केवल स्वतंत्र ही नहीं सुशासित भी होना चाहिए। इसकी चिंता सभी ऋषियों ने की है और अपनी-अपनी स्मृतियों में सुशासन की विधि भी बताई है। जैसे याज्ञवल्क्य स्मृति, आपस्तम्ब स्मृति आदि। वेदों में ईश्वर से प्रार्थना के अनेक मंत्र हैं जिनमें राष्ट्र के विद्वानों को ज्ञान से, वृक्षों को फल से, राजा को वीरता एवं सामर्थ्य से, गायों को दुग्ध से, माताओं को वीरपुत्रों से, खेतों को अनाज से एवं नदियों को जल से परिपूर्ण रखने की प्रार्थना की गई है। ये प्रार्थनाएं मात्र प्रार्थना न होकर हमें राष्ट्र धर्म के लिए प्रेरित करती हैं कि हम मानव धर्म के साथ-साथ राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों को पूरा करें। अनुशासन में रहें, राज्य के नियमों का पालन करें एवं राष्ट्र की बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक उन्नति में यथासंभव सहयोग करें। पर्यावरण को प्रदूषित करना पाप है। इसलिए विश्व के सभी धर्मों का अध्ययन व अध्यापन पर्यावरण की दृष्टि से करना चाहिए। आस्था और विश्वास को प्रकृति संरक्षण से जोड़ना आवश्यक है। राष्ट्र के सभी जन इतने बलशाली नहीं हो सकते कि वे अपनी सुरक्षा कर सकें इसलिए उनकी सुरक्षा में सहयोग देना सेवा है। इसी प्रकार सभी जन इतने धनी नहीं हो सकते कि वे अपनी आवश्यकताएं पूरी कर सकें। अत: उनकी आवश्यकता को पूरी करने में सहयोग करना हमारा धर्म है। प्राकृतिक संसाधनों का आवश्यकतानुसार एवं आदरपूर्वक उपभोग करना चाहिए, ताकि वे सबको दीर्घकाल तक प्राप्त होते रहें।

मनुष्य इस विशाल विश्व का केन्द्र बिन्दु है। उसकी कल्याण सिद्धि के लिए ही संस्कृति जागती है, सभ्यता पनपती है और धर्म उदित होता है। संसार के अनेक प्राणियों में सामाजिक चेतना के आधार पर मानव ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। दोनों की उन्नति ही धर्म का लक्ष्य है। जो प्राणियों के अभ्युदय तथा पारलौकिक नि:श्रेयस को सिद्ध करता है। भारतवर्ष धर्म परायण देश है इसलिए हमारी शिक्षा नीति में भारतीय धर्म शिक्षा का अध्ययन व अध्यापन तथा अनुसंधान आवश्यक है। धार्मिक शिक्षा से नैतिकता को बढ़ावा मिलेगा जिसकी आज सबसे ज्यादा जरूरत है। भारत की धरती का कण-कण धर्म भावना से ओतप्रोत है और भोग से अधिक योग और धन से अधिक धर्म को महत्व दिया जाता है। 'आचार: प्रथमो धर्म:' के आधार पर आचार ही धर्म का प्रधान अंग है। सदाचार का अभाव धर्म को अपने प्रधान लक्ष्य से विरत कर महत्वहीन बना देता है। धर्म मानव समाज के स्तर को उदात्त बनाने में परम सहायक होता है और उसकी हीन संकीर्ण मनोवृतियों को हटाकर उसमें उदार, उन्नत और श्रेष्ठ भावनाओं का समावेश करने में समर्थ होता है। धर्म मानव के भौतिक सुखों की उपेक्षा न करते हुए उसके आध्यात्मिक जीवन में पूर्ण सामंजस्य स्थापित करता है।

विश्व में भारतीय संस्कृति और सभ्यता का मूल स्त्रोत वेद ही है। यही नहीं, भारतीय वाङ्मय में विविध विषयों का जो भी भण्डार उपलब्ध होता है, अधिकांश वेदों पर आधारित है। दूसरे शब्दों में वेद वह विशाल समुद्र है जहां से भारतीयता की बहुमुखी स्त्रोतस्वनी का उद्गम होता है। भारत के महान विचारकों, आचार्यों, ऋषि मुनियों, मत प्रवर्तकों आदि ने वेदों को अपौरूषेय और प्राचीनतम स्वीकार करते हुए इसे ईश्वरीय ज्ञान कहा है। भारतीय संस्कृति परमप्राचीन और आध्यात्मिक भावनाओं का मुख्य केन्द्र होने के साथ ही विश्ववाङ्मय की अमूल्य धरोहर है। सदाचार के बिना धर्म धारण का कोई महत्त्व नहीं रखता। सदाचार ही मानव को मानव के निकट लाता है। यह व्यक्तित्व का आभूषण है। मानवता की सार्थकता सदाचार में ही निहित है। धर्म ही हमें सदाचार मार्ग पर चलना सिखाता है। धर्म और सदाचार एक दूसरे के पूरक हैं। हम जितने सदाचारी होंगे, उतनी नई पीढ़ी संस्कारवान और सदाचारी होगी।

सुपथमय जीवन उस व्यक्ति का है जो सदाचार से जीवन मार्ग पर चलता है। वह चिंतन ज्ञान और साधना से सत्य का दर्शन करता हुआ अपनी जीवन यात्रा पर चलता है। आध्यात्मिक दृष्टि से मानव जीवन का लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति है, परन्तु सामान्यत: जीवन का लक्ष्य ऊंचा बढ़ना या आगे बढ़ना माना जाता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अभिवृद्धि तथा समुन्नति में ही इसकी सार्थकता है। ऋग्वेद के एक मंत्र में प्रार्थना है कि हे प्रभु! ऐश्वर्य के लिए हमें सुपथ पर ले जाना। ऐश्वर्य दो प्रकार के होते हैं- भौतिक और आत्मिक। भौतिक ऐश्वर्यों में शारीरिक सुख व सुविधाएं प्राप्त होती हैं और आत्मिक ऐश्वर्यों से आत्मिक आनंद प्राप्त होता है। सुख शरीर का और आनंद आत्मा का विषय है। शरीर और आत्मा का संबंध होने पर ही जीवन का अस्तित्व बनता है। इन दोनों का एक दूसरे पर निरंतर प्रभाव पड़ता है। इंद्रियों की शुद्धि से आत्म साधना का मार्ग प्रशस्त होता है। यही चरित्र की शक्ति को बढ़ाती है। इससे संपन्नता और संपूर्णता आती है।

हमारी आत्मा कुपथ पर चलने से पूर्व हमें सचेत करती है परन्तु इस चेतावनी को भुलाकर कुपथ के साथ अर्जित धन भोग, रोग और शोक में अपव्यय होता है। इसके विपरीत सुपथ से प्राप्त भौतिक ऐश्वर्य, आत्म ऐश्वर्यों को बढ़ाने में सहायक होते हैं। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, संयम, सदाचार, अर्थशुचिता, पवित्रता, संतोष, तप, क्षमा, दया, स्वाध्याय, परोपकार, शांति, मृदुता आदि आत्म ऐश्वर्य हैं। हमारे जीवन के सभी कार्य मानवीय होने चाहिएं, जिस पर चलकर जीवन को श्रेष्ठ बनाया जा सकता है। अंत:करण की शुद्धता हमें निष्पाप बनाती है और सुपथगामी जीवन जीने के लिए आवश्यक है। इसलिए धर्म मार्ग की शिक्षा पर चलकर ही श्रेष्ठ, संस्कारवान और सुसंस्कृत समाज व राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है।

डॉ. किशनाराम बिश्नोई
प्रभारी, गुरु जम्भेश्वर धार्मिक अध्ययन संस्थान,
गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,
हिसार (हरियाणा)

सम्बन्धी

दोनों ओर के सम्बन्ध को, जग में सम्बन्धी कहते हैं।
सुन्दर तान की स्वर लहरी को, मधुर युगल बन्दी कहते हैं॥
प्यार की जड़ नित गहरी होती, दो परिवार का प्रेम मिलन है।
मधुर मधुर अनुभूति होती, कैसा अनुपम अपनापन है॥
दूर दूर रहते हैं फिर भी, मनसे जुड़े हुये होते हैं।
जैसे स्वर्णिम आभूषण में, सच्चे नग हीरे मोती हैं॥
सुख दु:ख के साथी हैं दोनों, सागर से कितने गहरे हैं।
प्रेम से जिनका तन-मन भीगा, दिल में खुशियों की लहरें हैं॥
रिश्तेदार प्यार की जड़ है, जिसमें कहीं ना कड़वापन है।
दोनों ने संतानें बदली जो अपने दिल की धड़कन हैं॥
फिर भी यदि पनप जाए तो, ऊंच नीच की बुरी भ्रांति।
दोनों घर बेचैन होत हैं, और चित्त की मिट जाये शांति॥
दुल्हन घर की लक्ष्मी होती, दहेज आदि का जिक्र ना करना।
बड़ी बड़ी मांगें रखो तो, दुश्तर हो जाये पूरी करना॥
इन बातों पर ध्यान जो रखे, इस दुनिया में सुखी वही है।
द्वेषभाव असाध्य रोग है, इसका फिर उपचार नहीं है॥

- हेतराम बिश्नोई
सेवानिवृत अधिकारी, इलाहाबाद बैंक
राष्ट्रीय मंत्री, अ.भा. जीव रक्षा बिश्नोई सभा,
अबोहर (पंजाब)

किस पर नाराज, किस पर प्रसन्न होते हैं भगवान?

1. गरीब होकर भी जो दानवीर है, उस पर भगवान प्रसन्न होते हैं।
2. जो धनी है, गुणवान है फिर भी नम्र है, उस पर भगवान प्रसन्न होते हैं।
3. जो धनवान होकर भी दान-पुण्य नहीं करता, उस पर भगवान नाराज होते हैं।
4. विद्वान, बुद्धिमान होने पर भी जो पाप कर्म करता है, उस पर भगवान जल्दी नाराज होते हैं।

- अशोक पूनियां (एलवीओ), बहादुरगढ़

"बिश्नोई पंथ परिचय" – 1

जिसका आराध्यदेव निराकार विष्णु, गुरु जाम्भोजी, आचार संहिता 29 नियम व ग्रंथ शब्दवाणी है वह बिश्नोई है, जिनका अवतार स्थल पीपासर, निर्वाण स्थल लालासर, समाधि स्थल मुक्ति धाम मुकाम, सर्वदा स्थिर स्थल अडिग ज्योति सम्भराथल, तीर्थ स्थल जाम्भोलाव है। बिश्नोई पंथ का प्रवर्तन कार्तिक बदी अष्टमी सम्वत् 1542 को समराथल धोरे पर गुरु जाम्भोजी ने असंख्य जन समूह की उपस्थिति में पूल्होजी को कलश पर हाथ रखवा कर कलश पूजा मंत्र : – **समरथ कथा सुणो सब कोई । ताते पृथ्वी उत्पति होई अकलरूप मनसा उपराजी तामा पांच तत्व होय राजी, आकाश वायु तेज जल धरणी। तामा सकल सृष्टि की करणी..... उच्चारित कर किया।** कलश पूजा मंत्र में सृष्टि की रचना व उसके कारण का वर्णन है। तत्पश्चात् गुरु महाराज ने पाहल मंत्र : **ओम नमो स्वामी शुभ करतार। निर्तार भवतार, धर्मधार पूर्व एक ओंकार.....** से पाहल बनाकर सर्वप्रथम अपने चाचा पूल्होजी पंवार को पाहल देकर बिश्नोई बनाया तत्पश्चात् वहां उपस्थित नर नारी को पाहल देकर बिश्नोई पंथ में दीक्षित किया। यह क्रम कार्तिक अमावस्या विक्रमी सम्वत् 1542 तक निरन्तर चलता रहा। गुरु जाम्भोजी ने उसके बाद भी समय-समय पर अनुयायियों को दीक्षित कर बिश्नोई बनाए।

गुरु जाम्भोजी ने बिश्नोई पंथ को एक विशिष्ट आधारभूत संगठनात्मक स्वरूप प्रदान किया। बिश्नोई पंथ में साधु, थापन, गायणा व गृहस्थ चार वर्ग का विधान किया, जिनके अलग-अलग सामाजिक दायित्व निर्धारित किये। बिश्नोई पंथ की अपनी विशिष्ट विशेषताओं से इस पंथ को विश्वपटल पर अनेक क्षेत्रों में सृष्टि संरक्षक का दर्जा मिला। वन्य जीव व वनों की रक्षार्थ बिश्नोई पंथ के बलिदानों का सृष्टि सृजना से आज तक कोई सानी नहीं है।

बिश्नोई बालक जन्म लेते ही बिश्नोई नहीं कहलाता है बालक के जन्म के तीसवें दिन गुरु जाम्भोजी के आदेशानुसार कलश पूजा कर पाहल मंत्र से पाहल बनाकर बालक को बालक मंत्र : **ओम शब्द गुरुदेव निरंजन। तां इच्छा से भये अंजन। हरके हाथ पिता के पिष्ट विसनूं माया उपजी सिष्ट.....** से बिश्नोई बनाया जाता है। यह क्रिया अन्य किसी धर्ममत या पंथ में नहीं है। बिश्नोई पंथ की यह अनुपम विशिष्टता है। उन्नतीस नियमों में तीस दिन सूतक प्रथम नियम है। बालक इसके बाद बिश्नोई पंथ का आजीवन अनुयायी होने का अधिकारी हो जाता है।

बिश्नोई पंथ में बिश्नोई दो वर्गों में दीक्षित होते हैं। बिश्नोई गृहस्थ दीक्षा मंत्र : **ओ३म् शब्द गुरु सुरति चेला पांच तत्व में रहे अकेला.....** तथा बिश्नोई साधु समाज में शामिल होने वाले साधु दीक्षा मंत्र : **ओम् शब्द सोहम् आप। अन्तर जपै अपप्या जाप.....**। प्रत्येक बिश्नोई के लिए गुरु जाम्भोजी के बताये सन्ध्या मंत्र (नवण मंत्र) **विसनू विसनू तूं भण रे प्राणी साधे.....** का जीवन में बहुत महत्व है। यह मंत्र नित्य सुबह-शाम जपा जाता है।

बिश्नोई पंथ में अभिवादन स्वरूप 'नवण-प्रणाम' कहा जाता है जिसके उतर में 'जाम्भोजी नै, विसनूजी नै, थानै, सबनै बोला जाता है। बिश्नोई पंथ का ध्वज आयताकार भगवें रंग का होता है। बिश्नोई पंथ में केवल मात्र अमावस्या व्रत का विधान है। इस पंथ में मूर्ति पूजा पूर्णतया वर्जित है। पंथ में यह दृढ़ मान्यता एवं विश्वास है कि उन्नतीस नियम मानने वाले को मोक्ष प्राप्त होता है। इन नियमों का पालन करने वाले पर भूत प्रेत, ओपरी छाया, जादू टोना, जंत्र-मंत्र का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। 29 नियमों के मानने वाले को जीवन जीने की उतम विधि मिलती है तथा मरणोपरान्त मोक्ष प्राप्त होता है।

"सबदवाणी" बिश्नोई पंथ की अमूल्य निधि है। सबदवाणी बिश्नोई पंथ की आत्मा है, जीवन की ऐसी

कोई समस्या नहीं जिसका निदान सबदवाणी में न हो। गुरु जाम्भोजी के पास समय-समय पर आने वाले जिज्ञासुओं की जिज्ञासा पूर्ति का प्रमाणिक व तार्किक वर्णन सबदवाणी में किया गया है। सबदवाणी परमपिता परमेश्वर सर्वशक्तिमान सृष्टि के रचयिता विष्णु स्वरूप गुरु जाम्भोजी के श्रीमुख से उच्चरित "सबद" है। बिश्नोई समाज के धार्मिक व सामाजिक अनुष्ठानों में सबदवाणी का सस्वर पाठ किया जाता है।

बिश्नोई पंथ का प्रारम्भ प्रहलाद भक्त से है। गुरु जाम्भोजी सबदवाणी में कहते हैं कि 'प्रहलादा सूं वाचा किवी आयो बारह काजै'। इसलिए होली का त्यौहार मनाने का बिश्नोई समाज का तरीका अन्य समुदाय से अलग है। होलिका दहन के दिन बिश्नोई समाज शोक संतप्त रहता है। उस समय होलिका प्रहलाद को जलाने के लिए अग्नि में प्रवेश करती है। होलिका को अग्नि से नहीं जलने का वरदान है। बिश्नोई समाज रात्रि को रूखा-सूखा भोजन करता है या भूखे ही रहते हैं। दूसरे दिन सुबह जब यह पता चलता है कि प्रहलाद भक्त जीवित बच गये तथा होलिका भस्म हो चुकी है। इस जानकारी से खुश होकर बिश्नोई समाज अपने क्षेत्र में स्थित चौकी (यज्ञशाला) पर एकत्रित होकर सबदवाणी के 120 शब्दों का सामूहिक पाठ व कलश पूजा कर पाहल मंत्र से पाहल (अभिमंत्रित जल) ग्रहण कर आपस में नवन प्रणाम करते हैं तथा हंसी खुशी से मिलकर हलवा-खीर आदि सात्विक भोजन ग्रहण करते हैं। ऐसा विधान हिन्दू समाज के किसी पंथ में नहीं है। यह बिश्नोई पंथ की सर्वमान्य प्रचलित विशिष्टता है।

क्रमशः.....

राजाराम थालोड़ एडवोकेट
30, कैनाल पार्क, श्रीगंगानगर (राज.)

सुख में सुमरन जो करे.....

एक आदमी नाई के पास बाल कटवाने और दाढ़ी बनवाने गया। जैसे ही नाई ने अपना काम शुरू किया, तो वो दोनों बाते करने लगे। उन्होंने बहुत सारे विषयों पर बाते की। जब बातों-बातों में प्रभु का विषय आया, तो नाई ने कहा- मैं प्रभु में विश्वास नहीं करता। तुम ऐसा क्यों कह रहे हो? ग्राहक ने पूछा। 'अच्छा, प्रभु है या नहीं ये जानने के लिए तुम बस बाहर गली में जाओ। मुझे बताओ, अगर भगवन होते तो क्या वहां इतने सारे बीमार लोग होते? क्या वहां लावारिस बच्चे होते? अगर भगवान होते, तो वहां ना तो दुःख होता, न दर्द। मैं नहीं मानता कि भगवन अपने होते हुए ये सब होने देते।'

उस ग्राहक ने कुछ पल सोचा लेकिन कुछ नहीं बोला क्योंकि वो बहस नहीं करना चाहता था। जब नाई ने अपना काम खत्म कर लिया और ग्राहक जाने लगा, जैसे ही उसने दुकान के बहार पाँव रखे, उसने गली में एक लम्बे बालों बाले और बढ़ी हुई गंदी दाढ़ी वाले आदमी को देखा। वो आदमी बहुत गरीब और गन्दा था। वो ग्राहक तुरंत दुकान में वापस गया और नाई से बोला- 'तुम जानते हो? इस दुनिया में नाई भी नहीं होते हैं। 'तुम ऐसा कैसे कह सकते हो? नाई ने हैरानी से कहा। 'मैं यहां हूं और मैं एक नाई हूं और मैंने अभी-अभी तो तुमारी दाढ़ी बनाई है। 'नहीं', वो ग्राहक बोला- 'नाई नहीं होते हैं क्योंकि अगर वे होते तो कोई भी आदमी लम्बे बालों और बिना कटी हुई दाढ़ी के नहीं होता, वो बाहर उस आदमी के जैसे'। 'अरे नहीं, नाई होते हैं!! लोग ऐसे होते हैं क्योंकि वो नाई के पास नहीं आते।' 'बिल्कुल सही', ग्राहक खुशी से बोला- 'बिल्कुल यही, यही सारी बात हैं। प्रभु भी होते हैं।'

ये इसलिए होता है क्योंकि लोग प्रभु के पास नहीं जाते और उसकी तरफ मदद के लिए नहीं देखते। इसलिए दुनिया में इतना दर्द और दुःख है।

'दुःख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोए।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुःख कहे को होए'

शिक्षा बिश्नोई, श्री विजय नगर (राज.)

संघर्ष

चल रहा संघर्ष है उस महाविश्राम तक,
किन्तु उसकी तिथि किसी ने आज तक जानी नहीं।

इस अनिश्चित काल का क्या सुनिश्चित क्रम बने,
सोचते रहते हैं इसको लोग होकर अनमने।
चिर अंधेरे को कहाँ तक ज्योति का संचार दें,
प्रश्नवाचक चिन्ह बनकर छंट गये बादल घने॥

है असीमित सत्य जिसके पार जा सकते नहीं,
वह अगम है वह अगोचर, शक्ल पहचानी नहीं।
चल रहा.....

यह असत् संसार जाने क्यों हृदय में बस गया,
कल्पना परिकल्पना का बस जहाँ विस्तार है।
झूठ ही सब झूठ है जो भी दिखाई दे रहा-
सत्य का देखा गया ना रुप, ना आकार है॥

जिसको पाने के लिये आयु गवाँता आदमी
मूर्खता का यह उदाहरण मानी है, बेमानी नहीं
चल रहा.....

'मैं स्वयम् ही ब्रह्म हूँ' वह यह भले ही सोच ले,
सृष्टि-रचना का निरन्तर यह अथक प्रयास है।
प्राणियों में श्रेष्ठ बनकर हम भले जीते रहे -
कर्म कटने में सदा से दीनता के दास हैं॥

मात्र जो अधिकार को ही मांगते रहते सदा,
वे किसी परिणाम के बन सके स्वामी नहीं।
एक दम संघर्ष है उस महा संग्राम तक -
और उसकी तिथि किसी ने आज तक जानी नहीं॥

योगेशपाल सिंह बिश्नोई
मुरादाबाद (उत्तरप्रदेश)

बेटी

बेटी एक वस्तु है या पूँजी, ये कोई समझ नहीं पाया।
क्योंकि उसका दाम तो, उसकी जननी ने ही लगाया।
बेटी वस्तु है.....
वह नहीं जानती थी कि इतना महंगा पड़ेगा उसका आना
और फिर मुश्किल होगा यहाँ पर रह पाना।
वह अपनी जिन्दगी को भी अपना न कह सकेगी।
जिन्दगी-भर दूसरों की छाया तले जीती रहेगी।
लेकिन कहे भी तो किससे कहे, कहाँ जाए।
सबके दु:ख को बांटती, अपना दु:ख रही छिपाए।
उसके लिए ये कैसी विडम्बना होती है
फिर भी बेटी तो बेटी होती है
उसे तो अपने अपनो ने ही वस्तु बनाया।
क्योंकि उसका दाम तो उसकी जननी ने ही लगाया।
बेटी वस्तु है.....
क्यों हुई है उसकी जिन्दगी इतनी सस्ती,
इस समाज के द्वारा वह कब तक रहेगी पिसती।
क्या वह एक खिलौना, जिससे खेलना है और तोड़ देना।
क्यों उसकी कीमत नहीं समझते है ये लोग।
उसके सिर पर रख देते हैं, भरकर अपने दोष।
वह तो उनके दोषों का बोझ ढ़ोती जाएगी।
जिन्दगी की राह पर अकेले चलती जाएगी।
फिर उसे किसी से शिकायत नहीं होती है।
क्योंकि बेटी तो बेटी होती है।
वह कभी नहीं कहेगी, उसे किस-किसने सताया क्योंकि
उसका दाम उसकी जननी ने ही लगाया।
बेटी वस्तु है या पूँजी.....

कुमारी शिवानी बिश्नोई
सुपुत्री श्री सुभाष चन्द्र
सुल्तानपुर, मुरादाबाद (उ.प्र.)

कलयुग में विष्णु दर्शन

भगवान कण-कण में विराजमान है, भगवान पूरी परीक्षा के बाद ही आदिकाल से भक्तों को दर्शन देते आये है। जुमले की साखी में स्पष्ट है कि ''कंचन पलट कियो कथिरो खल नारेलो गिरियो जीवने'' सतयुग में राजा हरिश्चन्द्र को पूरा आजमाने के बाद ही दर्शन दिया, रविदास की सच्चाई पर कुण्ड में गंगाजी प्रकट हुई, मीरा ने जहर का अमृत पान किया, नरसिंह भक्त की सच्ची लगन पर ही नगर अंजार में नेनु बाई का मायरा भरा, ऐसे अनेकों उदाहरण धर्म ग्रंथों में मिलते हैं।

वास्तव में "सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप, जाके हृदय सांच है ताके हृदय आप" सच्चाई के बराबर तप नहीं, झूठ पाप का भण्डार है, ऐसे समय में कहीं सच्चाई मिल जाती है तो भगवान हाथों-हाथ दर्शन देते हैं।

वर्तमान में ग्राम भोजासर तहसील फलौदी जिला जोधपुर राजस्थान जो मुख्य तीर्थ जाम्भोलाव धाम से पूर्व में 30 कि.मी. दूरी फलोदी जिला जोधपुर राजस्थान में फलौदी से नागौर जाने वाली पक्की डामर सड़क पर स्थित है। उस गांव में मन्दिर नहीं था, यह कमी ग्रामवासियों को अखरी और मिलकर 2004 में नक्शानुसार निष्काम भाव से गहरी लगन लगाकर एक भव्य मन्दिर 70 फुट पूर्व पश्चिम और 50 फुट उत्तर दक्षिण, पाँच फुट ऊँचे चौक पर बनवाना आरम्भ किया जो विक्रमी संवत् 2068 की श्रावण की अमावस्या को 68 फुट ऊँचाई डबल परिक्रमा सहित मकराना जड़ित भव्य बन पाया।

इस मन्दिर की विशेषता है कि इस मन्दिर के निर्माण में केवल एक ग्राम के ही निवासियों से स्वैच्छिक दान प्राप्त किया, बाहर से चन्दा नहीं प्राप्त किया, न ही विवाह शादी उत्सवों पर दान लिया, केवल जिस धर्म प्रेमी ने अपने मन से स्वयं मन्दिर में आकर दान दिया उसी से लिया ऐसे दान से ही मन्दिर आज भव्य रूप लिये हुए गुरु महाराज की असीम कृपा से पताका लहलहा रहा है, जो देखने व दर्शन योग्य है।

विशेष दर्शन - इस कलयुग में आश्चर्यपूर्ण अनोखी घटना है, यह है कि इस मन्दिर के साथ लगता दक्षिण में एक पीपल का वृक्ष संत सुरजनदास जी पूनिया गांव भीयांसर, गुरु जम्भेश्वर भगवान के पाटवी चेला के अनुरोध पर पैदल यात्रा समराथल से जांगलु, बगरेवाला धोरा रात्रि विश्राम जैसला (जो फलोदी तहसील में आया हुआ है) वहां से ग्राम भोजासर में दिन में पधारे और अपने हाथ से एक पीपल का वृक्ष लगवाया था। वो विगत वर्षों में सूखकर धराशायी हो गया जो भोजासर की पूरी जनता को मालूम है।

सच्चाई का प्रकाश प्रकट होना- विक्रमी संवत् 2068 श्रावण की अमावस्या को मन्दिर संस्था अध्यक्ष व दानदाताओं ने हाथ जोड़कर करबद्ध प्रार्थना की कि इस कलयुग में हम ग्रामवासियों ने अगर निष्काम भाव से स्वेच्छा से दान देकर यह भव्य मन्दिर बनवाया है, सच है तो जम्भेश्वर भगवान इस सूखे वृक्ष को हरा कर हम सब प्राणियों को कृतार्थ करावें, सत्य की बेल फैलावें। अति आश्चर्य की बात है कि संवत् 2068 भादवा की अमावस्या को देखते है तो यह पेड़ बिल्कुल सूखा पेड़ (पीपल का वृक्ष) सगल टहनियों में छाया देख सभी दानदाताओं का दिल झूम उठा आज पेड़ अति घनि हरियाली में झूम रहा है, गीता अध्याय दस में भगवान ने अपने रुपों का होना बताया है, सभी बनराई में मैं पीपल हूँ। भगवान विष्णुरूप में कलयुग में प्रकट होकर दर्शन दिया है, जो सभी भाइयों को वस्तुस्थिति देख दर्शन कर लाभ उठाने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए।

शैतानसिंह सारण
गांव भोजासर, जिला जोधपुर (राज.)

सबदवाणी में गुरु महिमा

श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान ने अपनी सबदवाणी में गुरु को पहचानने की बात कही है। उन्होंने अपनी वाणी में परमपिता परमेश्वर विष्णु को निरंजन, निराकार, निर्गुण, निराहारी, अडाल, अयोनि, अलख, अभेव, स्वयंभू को गुरु या सतगुरु नाम से पुकारा है और सबदवाणी के पहले ही सबद से गुरु को पहचानने का उपदेश दिया है। गुरु भगवान विष्णु, गुरु भगवान जम्भेश्वर और लौकिक गुरु जो चार प्रकार के कहे गए हैं जिनका वर्णन आगे होगा। संसार का कोई भी कार्य गुरु या सतगुरु के मार्गदर्शन और आशीर्वाद के बिना सम्पन्न होना दुष्कर है। गुरु की महिमा निम्न पंक्तियों से सिद्ध है:-

गुरु गोविन्द दोऊं खड़े, का के लागूं पांव।
बलिहारी गुरु देव की, जिन गोविन्द दियो बताय॥

'कबीर'

गुरुर्ब्रह्म गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुदेव साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

'श्रीमददेवी भागवत महापुराण'

ध्यान मूलमं गुरुर्मूति, पूजामूलम् गुरुर्पदम्।
मंत्र मूलम् गुरुर्वाक्य, मोक्ष मूलम् गुरुर्कृपा॥

भले आदमी संसार के दु:खों के लिए कष्ट सहते हैं। वे अपने आपको जलाते हैं, जिससे वे संसार को प्रकाशित कर सके। परमात्मा अपने आप में सत्-चित् और आनन्द अर्थात् वास्तविक सत्य और परम आनन्दमय है। गुरु जम्भेश्वर भगवान द्वारा विभिन्न प्रकार के 45 सबदों में गुरु या सतगुरु का उच्चारण किया गया है जिनमें 60 बार गुरु और 13 बार सतगुरु का प्रयोग करते हुए कुल 74 बार गुरु शब्द का उच्चारण हुआ है। कहने का तात्पर्य यह है कि गुरु जम्भेश्वर भगवान ने गुरु को पहचानने के भाव से विष्णु भगवान को पहचानने और उसी का जप तथा स्मरण करने की बात कही है, जो मोक्ष को देने वाला और आवागमन के चक्कर से छुड़ाने वाला है। सबद प्रसंग इस प्रकार है:-

सबद संख्या	सबद वाक्य	पंक्ति संख्या	गुरु	सतगुरु	कुल
1.	गुरु चिह्नू गुरु चिह्न पुरोहित	1	8	2	10
	गुरु मुखि धरम बखाणी जो	2			
	गुरु होयबा सहजे सीले नादे	3			
	विंदे तिंहि गुरु का अळिगार	4			
	पिछाणी सो गुरु परतकि	7			
	जांणी गुरु आप संतोषी	10			
	अवरां पोखी गुरु ध्याय रे	16			
	ज्ञानी तोड़िक मोहा सतगुरु	19			
	तोड़ै मन का साला सतगुरु	20			
	होई सहज पिछाणी				
13.	गुरु न चीन्हूं पंथ न पायो	4	1	-	1
15.	गुरु गुहर गरवा सीतल नीरूं	12	2	-	2
	से गुर खेवट छेहा छेहूं	17			
21.	गुर का सबद ज झींणी बाणी	25	1	-	1
23.	सतगुर मिलियो सतपंथ ज पायो	3	2	2	4
	तो पार गिरांय गुरु की वाचा	12			
	गुर प्रसादे केवल ज्ञाने	20			
	सतगुर तूठै पाइयै	22			
26.	सतगुर मिलियौ सतपंथ बतायौ	7	-	1	1
	वेद गरथ उदगारूं				
27.	ठोठ गुरू विषळीपति नारी जदिं	24	1	-	1
	पंक जदि बीयौं				
29.	गुर कै सबदि असंणि परमोधी	1	3	-	3

	अनंत कोङि गुर कै दावंणि विलग्या	5			
	गुर की नाथ डरीलो	8			
30.	गुरमुखि पवण उङाइयै	22	1	–	1
35.	गळ मैंपड़ी परासूं, जां जां गुरु न चीन्हों	5,6	1	–	1
36.	काफर थूळ भयाणों, जइयां गुरु न चीन्हो	3,4	1	–	1
37.	उतिम क्रंम कुंभारूं, जइयां गुरु न चीन्हों	3,4	1	–	1
38.	अइया पंथ कुपंथ, जइयां गुरु न चीन्हों	5,6	1	–	1
40.	सतगुर मिलियौ सतपंथ बतायौ भ्रांति चुकाई	5	–	1	1
42.	जे गुर विणि खेल पसारी	11	1	–	1
45.	दोय दिल दोय मन गुरु न चेला	6	2	–	2
	जोग न जोग्या भोग न भोग्या	17			
	गुरु न चिन्हौं रामो				
49.	पताळ का पांणि अकास कूं चडायले, भेंटिले गुरु का दरसणां	2	1	–	1
50.	अजंण मांहि निरंजन आछै, सो गुर लखण कंवारूं	16	1	–	1
53.	गुर हीरा विणजै लेहम लेहूं	1	6	–	6
	गुर नूं दोस न देणां	2			
	एती गुर के सरणां	6			
	गुर के आखरि कारांणि जोगी	11			
	गुर भेंटीलो जोग समझलो	13			
	गुरु वरजंता हेलै	30			
58.	पहराजा गुर की वाचा बहियौं	28	1	–	1
63.	गुर की वाचा वहियौ	34	1	–	1
67.	अई अमांणों तत समांणौ गुर फरमांणौ	35	1	–	1
70.	कोई गुर करि ज्ञानी तोड़क मोहा मन रखवाळे भाई	9	1	–	1
71.	गुर चेलै कै पाए लागै, देखो लोग अन्याई	2	1	–	1
72.	गुर की कलम कुरांण पिछांणीं	6	1	–	1
77.	सतगुर होयबा सहज चिन्हबा	4	–	1	1
79.	इणि गढ़ि कोई थिर न रहिबा निहचै चालि गया गुर पीरूं	2	1	–	1
84.	गुर गति छूटी टोट पड़ैला	5	1	–	1
85.	गुर परसादि काया गढ़ खौजो दिल भीतरि चोर न जाई	2	1	1	2
	थळियै आय सतगुर परगास्यौ, जो ले पड़ी लोकाई	3			
86.	गुर के वचने नींव खविं चालौ हथि जयौ जप माळी	12	1	–	1
90.	गुर गहणां जो लीवै नांहीं दसबंध घरि वोसायस्यैं	5	3	2	5
	सतगुर के बेड़ै न चड़ै गुर सांम न भायस्यैं	7			
	चंद आसंण सूर आसंण गरू आसंण समराथळे	13			
	कहै सतगुर भूलि न जाईयौ पडौला अभै दोजगे	14			
91.	मेरै गुरु ज दीन्हीं सिख्या सरब अलिंगण फेरी दिख्या	2	2	–	2
	सति सति भाखंत गुर रायौ जुरा मरण भौ भागूं	10			
92.	जुगां जुगां को जोगी आयौ सतगुर सीध बताई	5	–	1	1
94.	विसन जांभराय आप अपरंपर हवहल दिन ते कहियै	18	1	–	1
	गोरख गुरु अपारा	19			
96.	जै तैं गुर का सबद मांनीलो	8	1	–	1

	पोहि उतरिबा पारूं	9			
97.	पाहण प्रीति फिटा कर प्राणी गुर विणि मुकति न जाई	7	1	–	1
98.	जिंहिं गुर के खिण ही तायौ खिण ही सीयौं	1	1	–	1
99.	जिंह गुर के झरै न झरंणां	13	1	–	1
100.	सोई गुर निराळंब देव हरूं	11	1	–	1
101.	सतगुर चीन्है सहजै न्हाय सतगुर ऐसा तंत बतावै	4 19	–	2	2
107.	सतगुर आयौ सत पंथ बतायौ सुगरां भंयौ विसवासूं गुरु न चिन्हौं पंथ न पायौ जां गळि पड़ी परासूं	3 7	1	1	2
112.	जके पंथ का भांजणां गुरु का निंदणां	1	1	–	1
114.	चांदणै थकै अंधेरै कांय चालो भूलि रह्या गुर वाटो	2	1	–	1
117.	चेला गुर अपरचै खींणा मरतां मोख न पायौ	3	1	–	1
118.	बारां माहियौं एक ज घटै सूं गुर चेलौ लाजै	4	1	–	1
45	सबद		60 बार गुरु	14 बार सतगुरु	74 बार गुरु व सतगुरु

योग दर्शन में परमात्मा (ईश्वर) ही पहला गुरु माना गया है। इसलिए गुरु जम्भेश्वर भगवान ने भी गुरु या सतगुरु नाम से विष्णु या स्वयं को द्योतित किया है। श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का कोई गुरु नहीं था, वे स्वयं ही अपने गुरु थे। सबद संख्या 6 में कहा गया है कि- म्हे सरै न बैठा सीख न पूछी, निरति-सूरति सा' जांणी।

लौकिक रूप से गुरु उसे कहते हैं जो विद्या पढ़ाने वाला हो, जो ज्ञानी हो। जो धार्मिक क्रियाकर्म और संस्कार कराने वाला हो। जो वेद शास्त्रों का उपदेश करने वाला हो। जो योग साधना सिखाता हो। इनमें संत, महन्त, साधु, ब्राह्मण, देवपुरुष, गुरु आदि कहे जा सकते हैं। सुगरा मंत्र देने या उपनयन संस्कार कराने वाला व्यक्ति गुरु कहलाता है। लौकिक गुरु में भी गुरु जम्भेश्वर भगवान ने गुरु की सही पहचान करना, सही खोज करने की ओर इंगित किया है। गुरु जम्भेश्वर भगवान द्वारा ढोंगी एवं पाखण्डी गुरुओं से बार-बार सावधान किया है। सबद संख्या 90 में ऐसे कलावन्तों का वर्णन किया है यथा 'जां जां पवंण आसंण, पाणी आसंण।

चंद आसंण सूर आसंण, गुरु आसंण संभराथळे'
कहै सतगुर भूलि न जाइयौ, पडौला अभै दोजखे।

.....क्रमशः (शेष आगामी अंक में)

मोहनलाल लोहमरोड़, रोटू, नागौर (राज.)
ई-35, के.के. कालोनी, बीकानेर
फोन : 9414103029

लघुकथा

मेरे अपने

अपना शहर व अपना घर छोड़ लगभग बीस साल से ज्यादा वक्त बीत चुका। इस दौरान बिटिया सयानी हो गई। वर ढूंढा और हाथ पीले करने का समय आ गया। विवाह के कार्ड छपे, सगे संबंधियों व मित्रों को भेजे। शादी के शगुन शुरू हुए। आंखें द्वार पर लगी रहीं, इस आस में कि दूर-दराज के सगे-संबंधी आयेंगे। वे सगे-संबंधी जिन्होंने उसे गोदी में खिलाया। जिन्हें बेटी ने तोतली जुबान में पुकारा था। पंडित जी पूजा की थाली सजाते रहे, मैं द्वार पर टकटकी लगाए रहा। मोबाइल पर सगे-संबंधियों के संदेश आने लगे, सीधे विवाह वाले दिन ही पहुंच पायेंगे। जल्दी न आने की मजबूरियां ब्यान करने लगे।

मैं उदास खड़ा था। इतने में ढोलक वाला आ गया। उसने ढोलक पर थाप दी। सारे पड़ोसी भागे चले आए और पंडित जी को कहने लगे और कितनी देर है, शुरू करो। मानो पूछ रहे हों कि क्या अपने लोग आ गए ? मेरी आंखें खुशी से नम हो गयीं। मैंने पंडित जी से कहा - शुरू करो, मेरे अपने सब आ गए।

- कमलेश भारतीय

उपाध्यक्ष, हरियाणा ग्रंथ अकादमी
अकादमी भवन, पी-16, सैक्टर 14, पंचकुला

भजनलाल पच्चीसी

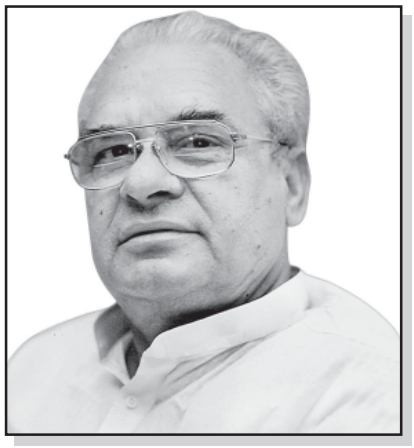

रूळयो घणोइ राज, टूकड़ा देस टूटियो।
उठी एक आवाज, भजनलाल जागो अबै॥1॥
करतां अपणो काम, भेंट हुई भगवान सूं।
धन धन तेरो नाम, भजनलाल सम कौण है॥2॥
देवे आच्छी राय, मिळयो भाई सम भायलो।
मिनख जमारै मांय, पोकरमल परचावियो॥3॥
ऊंचो हुवो अनाय, भमतो ही विधायक भयो।
सहकार मंत्री आप, सह नै साथै राखतो॥4॥
फैल्या घणा फसाद, एमरजेंसी कांठ हो।
बजायो शंखनाद, पळटयो राज देस मां॥5॥
टूरयो परहित टेक, भवसागर मां भागतां।
करया काम स नेक, भावी देख भजनलाल॥6॥
हरियाणै रो हार, बण्यो आपरी बानगी।
खेली चालां खार, चाणक्यै सम भजनलाल॥7॥
पळट पळट पलवेस, सैण बणाया सांपठा।
सहज निपटे कळेस, भजनलाल भयभीत नीं॥8॥
रूळतां दे रूजगार, सिरदार हुयो जद सिरै।
जपै जाप जयकार, विसन भगत स भजनलाल॥9॥
पेड़ लगावो खूब, परियावरण सुध पनपै।
पेड़ बड़ो मेहबूब, भमतो कवै भजनलाल॥10॥
हेलो दीन्हो हेत, केन्द्र मंत्री बण किरसां।
उग्या मोती रेत, भजनलाल माणस भलो॥11॥
सुणतो सहरी बात, चरचा हरदम चालती।
मिनखां सगळ जात, रैती संग भजनलाल॥12॥
समझ सांच रो सार, पाछै तज्या पंपाकिया।
हेलो दे हरबार, भजनलाल बुलावंतो॥13॥
ध्रमियां खातर धाम, विसन मिंदर विसवास रो।
बिस्नोयां रो नाम, भजनलाल चमकावियो॥14॥
गहरी नीवां खोद, विधायक सह बणाविया।
सागीड़ो सांसोद, राज हामी भजनलाल॥15॥
वैसी करया विचार, पत नियमां पाळी सदा।
बातां काढ्यो सार, बिस्मार्क हो भजनलाल॥16॥
किया सदा आह्वाण, क्रांति फेर करावण रा।
मुकाम ऊंचो जाण, भजनलाल पूगो सदा॥17॥
जाम्भैजी रो जाप, जपतो हरदम जागतो।
कट्यो पाप रो काप, भजनलाल भगती सिरै॥18॥
हिवड़ां रो तूं हेम, सगळा तनै ज सेंपतां।
पातो सह नै पेम, उदार मनां भजनलाल॥19॥
घाली कदै न घात, राजनीति रमतो रयो।
बात ख्याल विख्यात, देस विदेस भजनलाल॥20॥
दया रूप दिलदार, बंद खजानो खोलतो।
ऊंचो हाथ उदार, भामासाह भजनलाल॥22॥
भल्लो करै भल्लाह, जस कमावै जगत इणी।
गावै सह गल्लांह, अवल्ल पुरख भजनलाल॥22॥
जनम सुधारै जम्भ, बिश्नोई विसवास करै।
किसन मानै अचम्भ, भास्कर सम भजनलाल॥23॥
बिश्नोइयां कुण तारेह, तीन जून ताती घणी।
दो हजार ग्यारह, भजनलाल ओल्हरं हुयो॥24॥
करतां सूवां काम, जस फैलायो जगत मां।
नामी ऊंचो नाम, धू सम चमकै आव मां॥25॥

- डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई
बी-111, समतानगर, बीकानेर (राज.)

बधाई सन्देश

श्री बनवारी लाल सपुत्र श्री गोपालराम ईशरवाल, निवासी गांव सारंगपुर की पदोन्नति निदेशक व विभागाध्यक्ष अभियोजन (हरियाणा) के पद पर जनवरी, 2012 में हुई है। इससे पहले 2008 से अतिरिक्त निदेशक अभियोजन के पद पर कार्यरत थे। आप जांभाणी साहित्य में रूचि रखने वाले समाजसेवा को समर्पित सहृदय कवि भी हैं। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

श्री प्रीतम बिश्नोई सुपुत्र श्री तपसीराम जी बिश्नोई,निवासी मैनावाली, तहसील रावतसर, जिला हनुमानगढ की भारतीय थल सेना मे,ब्रिगेडियर पद पर पदोन्नति हुई है। इन्होंने इसी वर्ष पी.एच.डी की उपाधि भी प्राप्त की है। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

कुमारी सोनामिका बिश्नोई सुपुत्री सुभाष बेनीवाल (सी.ए.ओ.), निवासी गांव बुर्जभंगू (सिरसा) छात्रा एम.ए. (डी.एल.बी.), ओ.पी. जिन्दल स्कूल आफ इन्टरनेशनल अफेअर्ज, एन.सी.आर. दिल्ली ने 15 दिसम्बर से 18 दिसम्बर 2011 को जर्मनी की राजधानी बर्लिन में 'Cultural Diplomacy & International Relations' विषय पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस में भाग लिया जिसमें 100 से अधिक देशों के प्रतिभागी शामिल हुए। इस सम्मेलन को अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, बेल्जियम, ग्रीस, रोमानिया, हंगरी, टर्की, बुलगेरिया सहित कई देशों के वर्तमान/पूर्व राष्ट्राध्यक्षों, विदेश मन्त्रियों व राजनायिको ने सम्बोधित किया। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

कुमारी सुमेधा बिश्नोई सपुत्री स्व. श्री अनिरुद्ध बिश्नोई, निवासी गांव जंडवाला बिश्नोई, जिला सिरसा ने विद्या देवी जिंदल स्कूल, हिसार में आयोजित अखिल भारतीय आईपीएससी हॉकी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर गोल्ड मैडल, प्रशस्ति पत्र व 50,000 रुपये पुरस्कार स्वरूप प्राप्त किए। गत वर्ष एमजीडी गर्ल्स स्कूल, जयपुर द्वारा आयोजित इसी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान, गोल्ड मैडल व 50,000 रुपये हासिल किए थे। आपकी इन दोहरी उपलब्धियों पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

श्री नरसीदास (उपप्रधान, श्री बिश्नोई सभा, पंचकूला), निवासी गांव पारता, जिला फतेहाबाद का जिला न्यायवादी (Distt. Attorney) के पद पर पदोन्नति हुई है। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

श्री बाबूलाल मांजू निवासी बारासण उपखण्ड गुड़ामालानी, जिला बाड़मेर को 4 दिसम्बर, 2011 को ग्राम सेवा सहकारी समिति लि. उपखण्ड गुड़ामालानी का निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचन हुआ है। आप चेयरमैन एलडीसी (अध्यक्ष क्लब सदस्य) हैं। आपकी पत्नी श्रीमती प्यारी देवी बिश्नोई पं.सं. सदस्य (डेलीगेट) पंचायत समिति धोरी मन्ना से हैं। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

सामाजिक क्षति

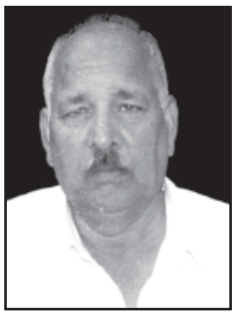

श्री नत्थूराम जी धतरवाल सुपुत्र स्व. श्री कुरडाराम जी धतरवाल गांव आदमपुर, जिला हिसार लंबी बीमारी के बाद 68 वर्ष की आयु में 18.1.2012 को अपनी सांसारिक यात्रा पूरी करके स्वर्ग सिधार गए हैं। इनका जन्म स्व. कुरड़ाराम जी धतरवाल सुपुत्र स्व. श्री बोगाराम जी धतरवाल के घर दिसम्बर 1943 को हुआ था। इन्होंने मैट्रिक की परीक्षा 1960 ई. में सदलपुर स्कूल से उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् श्री नत्थूराम जी ने अपनी शिक्षा हिसार के बिश्नोई मंदिर छात्रावास में ही रहकर सम्पूर्ण की। सन् 1966 में हिसार के दयानन्द कालेज से स्नातक की परीक्षा पास की। 1969 में डी.एड. छाजूराम मैमोरियल जाट कालेज, हिसार से पास की। श्री नत्थूराम जी बिश्नोई छात्रावास हिसार में श्री मनोहर लाल जी गोदारा, सचिव, श्री बिश्नोई मंदिर के साथ रहे। इन दोनों में गहरा लगाव था। इन्होंने 1973 में सरकारी स्कूल में सामाजिक विषय के अध्यापक के रूप में कार्य किया। श्री नत्थूराम जी ने 1980 में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की परीक्षा पास की। 1982 में चौ. भजनलाल जी के द्वारा मुख्याध्यापक बनाए गए तथा 1985 में प्राचार्य बनाए गए। इसके पश्चात 1990 में जिला शिक्षा अधिकारी के पद पर नियुक्त किए गए। सन् 2001 में जिला शिक्षा अधिकारी के पद से सेवा निवृत्त हुए।

श्री नत्थूराम जी 2003 से बिश्नोई सभा, हिसार में कोषाध्यक्ष के पद कार्य कर रहे थे। श्री नत्थूराम जी एक धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। आपने अपने जीवन में सभी धर्मों को समादर प्रदान किया था। आप सभी धर्मों के समारोहों में भाग लेते थे तथा सामाज के निर्माण कार्यों में भी भरपूर सहयोग देते थे। इन्होंने पंचकूला व दिल्ली मंदिर निर्माण में अपना तन-मन-धन से सहयोग किया। श्री नत्थूराम जी समय-समय पर मुकाम निज मंदिर व भण्डारे में भी सहयोग देते रहे हैं। उनके इस सर्वधर्म समभाव में उनकी दूरदर्शिता स्पष्ट झलकती थी। श्री नत्थूराम जी 'अमर ज्योति' पत्रिका से भी जुड़े रहे हैं तथा समय-समय पर अपना सहयोग भी दिया है।

श्रीमती शांति देवी धर्मपत्नी स्व. श्री मनीराम जी गोदारा (पूर्व गृह मंत्री, हरियाणा सरकार) निवासी गांव निमड़ी, जिला फतेहाबाद, हरियाणा का 18 जनवरी 2012 को 88 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया है। वे बड़ी ही मिलनसार, शांत एवं सुख-दुख में सभी को धैर्य बंधाने वाली महिला थी। इनका गुरु जम्भेश्वर भगवान जी में अटूट विश्वास था।

अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार भगवान गुरु जम्भेश्वर महाराज से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्माओं को अपने श्रीचरणों में स्थान दें तथा उनके परिवार को इस दु:ख की घड़ी को सहने का सामर्थ्य प्रदान करे।

पाठकों की कलम से.....

'आइए अपनी पहचान बनाएं-4' के लेख में बिश्नोई समाज के लिए एक प्रतीक चिन्ह होना चाहिए, पर संतोष पूनिया ने अपने विचार रखे थे।

वाल्तेयर ने कहा - हो सकता है मैं आपके विचारों से सहमत न हो पाऊं फिर भी विचार प्रकट करने के आपके अधिकारों की रक्षा करूंगा। बिश्नोई पंथ की स्थापना के समय गुरु जाम्भोजी ने बिश्नोई की पहचान उनके व्यवहार, चरित्र, आचार-विचार तथा उन्नतीस नियमों के पालन को माना था। यदि किसी प्रतीक चिन्ह को मान्यता दी जाती है तो बिश्नोई बन्धु गुरु जाम्भोजी की तस्वीर की जगह प्रतीक चिन्ह को मानने लग जाऐंगे। गुरु जाम्भोजी ने तंत्र-मंत्र, मूर्तिपूजा तथा प्रतीक पूजा का विरोध किया। जाम्भोजी ने सबदवाणी तथा उन्नतीस नियमों में व्यक्ति के आध्यात्मिक पक्ष के विकास पर अधिक जोर दिया है। प्रतीक चिह्न आध्यात्मिक न होकर भौतिकता का चिह्न बन जाएगा। बिश्नोई समाज में किसी प्रतीक चिह्न स्वीकार कर लिया जाता है तो आने वाली पीढ़ी गुरु जाम्भोजी और उनकी सबदवाणी तथा उन्नतीस नियमों को भूलकर प्रतीक चिह्न को मानने लग जाएंगे। गुरु जाम्भोजी के प्रति लोगों की आध्यात्मिक भावना कमजोर हो सकती है।

रुड़ाराम ढाका और जगदीश ढाका
विष्णुनगर बावरला (सांचौर), जिला जालौर (राजस्थान)

अमर ज्योति पत्रिका का दिसम्बर अंक पढ़ा, जो कि अच्छा लगा। लेख, कविताएं आदि। इस अंक में गुरुवाणी व आइए अपनी पहचान बनाएं-9, हमारा बिश्नोई समाज एवं युवा वर्ग की स्थिति अत्यन्त सराहनीय हैं। आइए अपनी पहचान बनाइए लेख में जो सम्पादक महोदय जी ने प्रतिक्रियाएं मांगी हैं। इसमें लेखिका की सोच आधुनिक है। मैं तो वैसे एक किसान हूं, जहां तक बिश्नोई धर्म के प्रतीक चिह्न की बात है तो हमारा युवा वर्ग प्रतीक चिह्न ले सकता है। मैं युवा वर्ग को हर संभव मदद देने को तैयार हूं। किंतु जब तक हमारे समाज में सोसायटी नहीं बनेगी जो कि ग्रामीण स्तर पर, कस्बों व शहरों में तथा कम से कम हर प्रांत जहां हम रहते हैं वहां एक-एक ज्ञानी संत महात्मा नहीं होंगे तब तक हमारा सुधार नहीं होगा क्योंकि पिछली पीढ़ियों में अनपढ़ होने व वर्तमान में पढ़े-लिखे होते हुए भी सबदवाणी जम्भसागर का हमें ज्ञान नहीं है। जैसे कि हिन्दू संत ब्रह्मलीन स्वामी समसुखदास जी महाराज राजस्थान से व परम् आदरणीय पूज्य श्री आशाराम जी बापू कितनी मेहनत करके अपनी सत्संग वर्षा से पूरे भारतवर्ष व विदेशों में भी सेवा कर रहे हैं। इस प्रकार सोसायटी को समाज अपनी श्रद्धा अनुसार चन्दा देगा एवं मीटिंग में समाज शक्ति देगा जहां भी आपसी झगड़े हों व धर्म की हानि हो रही हो वहां जाकर भाई चारे से मामला निपटाएं तो इससे काफी सुधार होगा।

हेतराम जाणी, गांव बड़वा, भिवानी

मैं अमर ज्योति पत्रिका का पिछले एक वर्ष से पाठक हूं। अमर ज्योति दिन प्रतिदिन प्रगति के सौपान पर चढ़ती जा रही है। बहुत ही गर्व की बात है कि सह हिन्दी की उन दुलर्भ पत्रिकाओं में से है जिन्होंने छह दशक की यात्रा तय की है। पत्रिका का नव वर्ष का अंक पाकर हृदय गद्‌गद् हो गया। पत्रिका का आवरण अत्यन्त ही आकर्षक था। अंतिम कवर पृष्ठ पर पिछले वर्ष की सभी पत्रिकाओं के आवरण चित्र देखकर वर्ष भर याद ताजा हो गई। पत्रिका के अंदर नव वर्ष से संबन्धित कविताओं को पढ़कर मन आनन्द विभोर हो गया। लघु कथा व कहानी भी अत्यन्त ही मार्मिक, हृदय को छू लेने वाली व शिक्षाप्रद लगी। सम्पादकीय भी मन व बुद्धि को उद्वेलित करने वाला लगा। सम्पादक महोदय ने उचित ही लिखा है कि नव वर्ष तभी सार्थक होगा जब हम कुछ नया व साकारात्मक करने का संकल्प लेंगे। गुरु जाम्भो जी के आलौकिक व्यक्तित्व पर केन्द्रित लेख अत्यन्त ही शोधपरक व ज्ञानवर्धक है। इस लेख को पढ़कर गुरु जाम्भो जी के अवतारी व्यक्तित्व की प्रमाणिक जानकारी मिलती है। अमर ज्योति सही अर्थों में सामाजिक, आध्यात्मिक, पर्यावरण व साहित्यिक पत्रिका है।

मृगेन्द्र, बढ़वाली ढाणी, हिसार

बिश्नोई मन्दिर फलावदा

जो मांगोगे सौ मिल जाएगा

उत्तर प्रदेश के जिला मेरठ में एक कस्बा फलावदा है। जहां पर कभी हरियाणा-राजस्थान से पलायन करते हुए बिश्नोई यहां पर आकर बसे थे। इसी कस्बे में एक प्राचीन सिद्ध पीठ श्री बिश्नोई मन्दिर है। इस मन्दिर में किसी एक स्थान पर बिश्नोई साधु की समाधि है। आज तक यह मन्दिर एक गुमनाम जीवन व्यतीत करता आ रहा है। मेरे समय में (जब मैं प्रधान था) जब उस मन्दिर का निर्माण कार्य चल रहा था, तो खुदाई में चूना मिट्टी से बना हुआ एक यज्ञ कुंड मिला। वह इतना पुराना था कि वह अपने उस स्थान से सुरक्षित प्राप्त न किया जा सका। उस समय उसमें राख अर्थात काली मिट्टी भी थी। मुझे कुछ बुजुर्गों ने खुदाई के लिए मना किया कि यहां पर किसी बिश्नोई साधु की समाधि है। पर मेरे मन में इस मन्दिर के इतिहास को जानने की जागरूकता हुई और मैंने खुदाई करवाना ही उचित समझा। कोई भी मजदूर खुदाई करने को तैयार नहीं था वे डर रहे थे कि कहीं उनके साथ कोई अनहोनी घटना न घट जाए। इस तरह की अफवाह उड़ भी रही थी। मैंने किसी भी अनहोनी से न डरते हुए स्वयं अपने हाथों से कार्य प्रारम्भ किया। खुदाई के समय उस स्थान पर छोटी (लकहोरी) ईंटों का बिछा हुआ चबूतरा निकला। ईंटों को हटा कर देखा तो मिट्टी व फिर उसी प्रकार से एक और चबूतरा मिला। इस प्रकार तीन-चार चबूतरों की खुदाई करी। ऐसा लग रहा था जैसे उस स्थान पर कुछ दबा कर रखा गया हो। खजाना होने की अफवाह भी उड़ी कि उस स्थान पर खजाना है। किसी कारणवश अगले दिन मजदूर कार्य पर न आ सके। उसके बाद यदा-कदा कार्य तो हुआ। उस स्थान को नजरअंदाज कर दिया गया पर मेरे आगे आर्थिक समस्या आ जाने के कारण आगे कार्य न चल सका। जिस कारण असन्तुष्ट होकर मैंने जहर (नीला थोथा) खा लिया जिसका असर मेरे कपाल में (सिर के बीचों बीच) चोट कर रहा था। उसी समय कोई देवात्मा आकर मुझसे कुछ बोली और कुछ देर बाद मैं अचेत हो गया। उसके बाद क्या हुआ कुछ याद नहीं रहा। प्रातः डॉक्टर से परामर्श किया। उन्होंने कहा पानी की बोतल चढ़ानी पड़ेगी। पर मैंने उनकी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया। कुछ माह बाद मेरी शादी एक ऐसे परिवार में हो गई जिस घराने में जज, इंजीनियर, डॉक्टर व छः पीएच.डी डॉक्टर हैं जो देश के भिन्न-भिन्न राज्यों में सम्मानजनक पदों पर स्थापित हैं। शादी के बाद से फलावदा छुट गया। ये सब उस मन्दिर में रहने वाली देवात्मा के कारण ही हुआ। इसलिए आज मैं सत्य को नजरअंदाज न करते हुए समाज के धर्म बन्धुओं व साधु सन्तों से लिखकर कह रहा हूं कि इन सत्य घटनाओं को नजरअन्दाज न करे। अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा से भी अनुरोध है कि वह मेरी इन बातों को हल्के में लेकर नजरअन्दाज न करे। वरन उस सिद्ध पीठ मन्दिर को अपने अधिकार में लेते हुए उस मन्दिर का भव्य निर्माण कराए। इस मन्दिर में सहयोग करने वाले धर्म प्रेमियों की मनोकामना अवश्य पूर्ण होगी। इस मन्दिर को नजरअन्दाज करने वाले अधिकांश बिश्नोइयों का पतन हो चुका है। इस कस्बे में कभी बिश्नोई जाति का जमींदारा हुआ करता था।

कस्बे के बाहर जहां तक देखो बिश्नोई समाज की सम्पत्ति थी। मुस्लिम शासन में भी बिश्नोइयों का कस्बे में अच्छा दबदबा था। सभी ने इस मन्दिर को अधिकांश नजरअन्दाज किया। जिस कारण आज यहां के महल चौबारे खण्डरों में तब्दील हो गए। सम्पत्तियां

हाथों से खिसक गई। अब से लगभग 20 वर्ष पूर्व चौ. परिवार से कर्नल देवेन्द्र सिंह बिश्नोई ने चुनाव लड़ा था और जीतते जीतते हार गए थे। मैं समाज से हाथ जोड़कर यह सत्य कह रहा हूं। उस मन्दिर का निर्माण करवाने हेतु सहयोग करें। उस समय मेरे जिन साथियों ने मेरा सहयोग किया था आज वे अच्छी नौकरी पर व उस कस्बे से बाहर हैं। ऐसे पवित्र धर्म स्थल को छोड़कर 'इधर-उधर भटकने से कोई लाभ नहीं होगा। उसके भव्य निर्माण में सहयोग करें। भक्त की श्रद्धानुसार मनोकामना शत्-प्रतिशत पूर्ण होगी।

हरिओम बिश्नोई (पूर्व प्रधान)
फलावदा (मेरठ)

भजन

मिनखां देही में आना, बहुत कठिन है दोबारा,
चेत हे चेतनहारा।

थोड़े दिन का जीवन है, एक दिन पड़ेगा जाना,
यह दुनिया है तेरे लिए, एक मुसाफिरखाना,
सबको पड़ेगा छोड़ना, महल गली चोबारा।
चेत हे चेतनहारा।

लख चोरासी योनि में, तू बारम्बार जाएगा,
कुत्ता बिल्ली चूहा कभी, गधा कभी बन जाएगा,
झेलेगा इन योनि में, भयंकर दुख अपारा।
चेत हे चेतनहारा।

यह जीवन भवसागर है, इसमें कई तूफान हैं,
इसमें डूब जाएगा, जो ऐसा नादान है,
विष्णु जी के नाम को, जिसने नहीं पुकारा।
चेत हे चेतनहारा।

आरजू एवं अरमान ईशरवाल
सारंगपुर (हिसार)

सामाजिक बुराई-नशा

भुण्डी बात अम्ल का खाणा, फटा कपड़ा फिरे ऊभाणा।
कमाई रो धान बेचियो जावे जबरी चीज तम्बाकु लावें।
राबड़ खाणा खुब उड़ावे, दिन सुरात चोगणी चावे
एक आवे दुजा जावे म्हारी डाली तीजा निभावे।
जाडा मिनख गांव है मोटो, सैण सगा रो कोनी तोटी।
मोटो भाग जाई है बेटी रूपया सुं भर देशी पेटी।
बेटी बाप रो काल कहावे, उणने आदर अदको भावे।
माता-पिता ने मता उपाया, सगपण सारू सगा बुलाया।
वर्ष चौदह की हर में बाई, साठ वर्ष रो धरियो जवाई।
कड़िया, कड़ी, हांयली लाया, गेणां गांठा खुब चढ़ाया।
नौ हजार नौ सौ लिना, जद बाई रा सगपण किना।
सगा-सगा अब जीमो रोटी, पछै बात कराला मोटी।
मोटा री मनवारा मोटी, पहला अमल पछै जीमा रोटी
पीढ़ा माथै मैली थाली, सगिया गावे सगा ने गाली।
सगा थारी नगरी नारी, बालपणे में भैंसा चारी।
एक बंधाणी दुजा आया, धुजै डोले कम्पै काया।
बाटकी भर ने अमल छाणियो, एक दुजे रो पल्लो ताणियों।
दिन ऊगे से देख्या नांही, सगा गया रात रे मांही।
अबै बंधाणी सिवरे थौरा, अमल पिवणिया सगला दोरा।
एक बंधाणी पकड़ बिठायो, सगपण रो सारो ध्यान करायों।
दारू पीकर महफिल मचावे मिनखां मांई इज्जत गमावें।
नेना टाबर काम है कोजो, मत बताओ नशे रो लेजो।
ऐड़ा मिनखारो मुंह है कालो, जका केवे के अमल गालो।
क्यूं लेवो थे अमल, डोडा, सारा घर रा ने देवो गोडा।
रामनिवास हांणियां घणो समझावे, नशा करणा कुण सिखावे।
हो खोटा का खोटा करणा, ऐसी बुरी सु जरूर डरणा॥

रामनिवास बिश्नोई
गांव हांणियां, जोधपुर (राज.)

धर्म हुवै पापां छूटीजै

'जम्भनाम की लूट है, लूट सकें तो लूट
अन्त समय पछताएगा, तेरा प्राण जायेगा छूट।'

भगवान विष्णु के पूर्ण अवतार गुरु जम्भेश्वर आध्यात्मिक जगत के महान विभूति थे। विष्णु रूप में उनके नौ अवतार पहले हो चुके थे, जिनका वर्णन उन्होंनें अपनी देववाणी में किया है -

'नव अवतार नमो नारायण, तेपण रूप हमारा थीयूं॥'

जम्भेश्वर जी की वाणी सबदवाणी (जाम्भवाणी) के नाम से विख्यात है। बिश्नोई सम्प्रदाय में सबद वाणी अपरनाम जम्भवाणी को पांचवा वेद भी माना जाता है जिसका मूल लक्ष्य कर्मशीलता, आत्मज्ञान और लोकमंगल है। गुरु जम्भेश्वर जी ने अपनी वाणी से उन्नतीस नियमों की स्थापना करके सहज जीवन पद्धति का निर्माण किया है जो पर्यावरण की दृष्टि से अति उत्तम है उन्नतीस नियमों में एक दोहा भी प्रचलित है-

'उणतीस धर्म की आखड़ी, हिरदै धरियो जोय।'
जाम्भेजी कृपा करी, नाम बिश्नोई होय॥

इस तथ्य में एक प्रसंग दिया गया है कि

प्रसंग - एक बिश्नोई आय कै, पुछै भेद विचार
बेटा बेटी कुटुम्ब सूं, मोहन छूटै लिंगार
घरमांही मुक्ति होवै, सो तुम कहो मुरार
बूढ़े ऐसे बूझीयों, जीव का करो उद्धार

बूढ़े खिलेरी ने एक समय समराथल पर श्री देव जी से पूछा कि हे देव ! मेरा बहुत ही लंबा चौड़ा परिवार है। कुटुम्बजनों से मेरा मोह हो चुका है। अब छूट नहीं रहा है। यदि इस प्रकार से मोह में जकड़े हुए प्राण निकल गये तो फिर जन्म-मरण के चक्कर में आना पड़ेगा। किन्तु मैं मुक्ति चाहता हूँ। इस मोह के रहते हुए कैसे संभव है। घर बैठे ही मेरी मुक्ति हो जावे। ऐसा उपाय बतलाइये, तब श्री देवजी ने शब्द सुनाया - शब्द

ओ३म विष्णु-विष्णु भण अजर जरीजै,
धर्म हुवै पापां छूटीजै।।

हे मानव ! यदि तू घर में रहते हुए अपना कल्याण चाहता है तो परमपिता परमात्मा को परम प्रिय 'ओ३म-विष्णु' इस नाम के द्वारा हर क्षण स्मरण कर तुम्हारे हृदय में बैठे जो काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि सभी नष्ट हो जायेगें इससे तुम्हारे भीतर धर्म की राशि एकत्रित होगी और वह राशि पापों के ढेर को काट देगी, क्योंकि धर्म के सामने पाप कभी टिक नहीं पाता। इसलिए हम सभी को गुरु महाराज के नियमों का पालन करना चाहिए।

'भरा नहिं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं,
हृदय नहि वो पत्थर है, जिसमें जम्भेश्वर का प्रेम नहिं।'

आँचल बिश्नोई
गांव रसूलपुर गुर्जर, मुरादाबाद (उ.प्र.)

क्या मिला?

जरा सा व्यापार मिला,
अहंकार हो गया।
जरा सा धन मिला,
बेकाबू हो गए।
जरा सा ज्ञान मिला,
उपदेश की भाषा सीख ली।
जरा सा सम्मान मिला,
पागल हो गए।
जरा सा अधिकार मिला,
दुनियां को तबाह कर दिया।
जरा सा यश मिला,
दुनियां पर हंसने लगे।
जरा सा रूप मिला,
दर्पण ही तोड़ ड़ाला।

-विजय सिंवर बिश्नोई
गांव- 4 टी.के. ढाणी, श्रीगंगानगर

दिशाहीन होता युवा समाज

आज जब हम घर से बाहर निकलते हैं तो ज्यादातर देखने में आता है कि जगह-2 युवा लड़के टोलियां बनाकर खड़े हैं। जिनमें कुछ लड़कों ने तो गले में श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का लॉकेट डाला होता है तथा उनके मुँह में सिगरेट होती है। कोई जर्दा व तम्बाकू का सेवन कर रहा होता है। जो युवाओं में बढ़ती नशे की लत के संकेत हैं। आवारा घूमता हर किसी को परेशान करना अन्यथा तेज गाड़ी चलाना व बिना मतबल झगड़ा करना इन युवाओं का फैशन बन गया है। जो एक अति चिंता की बात है क्योंकि बिश्नोई समाज व बिश्नोई पंथ में वही आता है जो गुरु जम्भेश्वर महाराज द्वारा दिए गए 29 नियमों का नियमित पालन करता है। लेकिन यह सब कुछ आज का युवा समझ नहीं रहा है। जिसकी वजह से बिश्नोई समाज का रुतबा घटता जा रहा है।

एक ओर यदि इसी युवा को किसी धाम या धर्मिक स्थल पर जाते देखे तो पता चलता है कि ये युवा नशा करके यात्रा करते हैं तथा उसी अवस्था में प्रार्थना करने चले जाते है। बीच रास्ते में कोई सिगरेट पी रहा है, कोई जर्दा तो कोई तम्बाकू का सेवन कर रहा है। जो बड़ी शर्मिंदगी की बात है।

अब ज्यादातर तो लोग अपने मोबाइल के पिछले दो नम्बर 29 तथा गाड़ियों के आगे-पिछे 29 लिखवाकर घूमते हैं जो कि औचित्य की बात नहीं है। यह एक दिखावा मात्र है क्योंकि 29 लिखवाने से कोई बिश्नोई नहीं बनता। बिश्नोई बनने के लिए 29 नियम रखने पड़ते हैं। समाज सुधारना व अच्छे कार्य करना चाहिए वही युवा आज नरक की ओर अग्रसर है। इस समाज को जिन युवाओं की जरुरत है उन्हीं युवाओं का भविष्य डूबता नजर आ रहा है। सच पूछो तो इन युवाओं से यदि बिश्नोई पंथ के 29 नियमों के बारे में पूछा जाए तो इन्हें याद ही नहीं है। 29 नियमों का पालन करना तो दूर की बात है और ना ही इनको गुरु महाराज द्वारा बताए गए 120 शब्द जो ये सिर्फ देखकर ही बोल सकते हैं।

आज युवक को मान-मर्यादा की कोई चिंता नहीं है, जो एक बहुत चिंता की बात है। आदर सत्कार नाम की कोई चीज तो इन युवाओं में दिखाई नहीं देती तथा मुकाम धाम को इन युवाओं ने इसे एक धार्मिक स्थल न मानकर एक भ्रमणीय स्थल समझ रखा है। जहां जाकर ये उल्टी-सीधी हरकतें करते हैं तथा अपनी मनमानी करते हैं। अगर किसी के साथ थोड़ी बहुत ऊंच-नीच हो जाती है, तो कहते हैं तूं हमें जानता नहीं हम बिश्नोइयों के लड़के हैं हम तुझे देख लेगें। जबकि बिश्नोई पंथ में हमेशा शांत रहने को कहा गया है। हमारे गुरु महाराज ने तो कहा था कि -

उन्नीस धर्म की आखड़ी हिरदे धरियो जोय
जाम्भो जी किरया करी, नाम बिश्नोई होय

जबकि आज के युवा को इसका अर्थ ही मालूम नहीं है क्योंकि बिश्नोई के घर जन्म लेने मात्र से बिश्नोई नहीं कहलाता। 29 नियमों का पालन करने से बिश्नोई बनता है, क्योंकि गुरु महाराज के अनुसार उत्तम कुल में पैदा हुआ इंसान बड़ा नहीं बनता वो तो सिर्फ अपने कर्मों के अनुसार बड़ा बनता है, इसलिए मैं गुरु महाराज से यही विनती करता हूँ कि इन युवाओं को सद्बुद्धि दें ताकि ये अपना कर्त्तव्य समझे व सही राह पर चलें ताकि समाज का भला कर सके व हम शांति से प्रगति कर सकें।

इस लेख के माध्यम से मैंने अपने विचार में वही प्रस्तुत किया है जो मैंने अपनी आंखों से देखा है। जो एक सच है फिर भी अगर किसी को मेरे विचार बुरे लगे हों तो मैं क्षमा चाहता हूँ क्योंकि आँखों देखा ही सच होता है और सच कड़वा होता है।

सुभाष सिहाग
गांव धांगड़, फतेहाबाद (हरियाणा)

समय की मांग : बेटा–बेटी एक समान

समय की पहचान बेटा-बेटी एक समान
"त्यागिए मोह बेटे का करिये दीदार बेटी का"

आज भले ही समाज आर्थिक समृद्धि की ओर तेजी से अग्रसर है लेकिन लगता है वैश्विकता की इस अंधाधुंध दौड़ में मानवीय मूल्य कहीं खो गए हैं। जहाँ सुख सुविधाएं बढ़ रही है, वहीं इन्सान का आन्तरिक खोखलापन कुछ ज्यादा ही बढ़ गया है। देश इस समय इन्सानियत को शर्मसार करने वाले कुकृत्यों से दहक रहा है जैसे- नशा, अराजकता, पाखंडवाद, निर्दयीपन व कन्या भ्रूण हत्या। आज सभी चाहते हैं कि उनके घर बेटा पैदा हो लेकिन जब बेटियां ही नहीं होंगी तो हम बेटों के लिए बहू कहां से लाएंगे। नारी के बिना समाज की उत्पत्ति संभव नहीं है। आज काफी जगहों पर बेटियों को गर्भ में ही मार दिया जाता है। यह एक बहुत ही घिनौना अपराध है। काफी घरों में बेटियों को आज भी बहुत कम अधिकार दिए जाते हैं। उनको अनपढ़ या बहुत कम पढ़ाया जाता है। उनके लिए हर क्षेत्र में कंजूसी बरती जाती है। लेकिन हर क्षेत्र में उन्होंने अपनी क्षमता का परिचय दिया है। पुराने इतिहास में सहजो बाई, लक्ष्मीबाई, मीराबाई, अमृता देवी आदि न जाने कितनी बेटियां पैदा हुई हैं। इस सदी में कल्पना चावला, सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल, प्रतिभा पाटिल ने देश का नाम ऊँचा किया है। बेटियां घर में गऊ के समान होती हैं। वे अपने माता-पिता के सामने कभी आँख उठाकर भी नहीं देखती लेकिन बेटियों ने आवश्यकता पड़ने पर कुर्बानियां भी दी है। आज के इस विज्ञान युग में इन्सान यह भी भूलता जा रहा है। बेटी एक नहीं बल्कि दो-दो घरों को रोशन करती है। केन्द्र व राज्य सरकारों के लाख प्रयासों के बावजूद भी लोग इसे नहीं समझते। आज जब भी महिलाओं को आरक्षण की बात आती है तो हमें बरबस ही 'बिश्नोई रत्न' चौ. भजनलाल जी की याद आ जाती है, जिन्होंने महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण दिलवाया। महासभा को भी कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए प्रचार-प्रसार करना चाहिए। आसोज व फाल्गुन मेलों के शुभ अवसर पर उपस्थित जनसमूह से बेटा-बेटी एक समान व कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए शपथ ग्रहण करवानी चाहिए। बिश्नोई समाज में 'बेटा-बेटी एक समान' को लागू करके हम उसी तरह विश्व के सामने आदर्श बनेंगे। जिस तरह पुराने इतिहास में पर्यावरण क्षेत्र में 363 कुर्बानियां देकर बनाया चंद पंक्तियां बेटा-बेटी एक समान लागू करने व कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए प्रस्तुत है-

तीन साल पहले घर में कांसी की थाली बजी,
सभी की बांछे खिल गई,
बहन, बुआ ने भी नेग मांगे,
दाई भी अड़ी, फिर चहकी, मुह मांगा नेग जो मिला
हर तरफ बाजे बजे,
क्योंकि बेटा पैदा हुआ था,
मगर आज घर में उदासी छाई है।
हर कोई चुपचाप सा है।
घर में कोई नया मेहमान आया है
फिर भी न जाने क्यूं मातम छाया है
इन सब का कारण आज समझ में आया है
क्योंकि घर में नया मेहमान 'बेटी' आया है
इसलिए घर का हर सदस्य मुरझाया है।
शास्त्रों ने बेटा-बेटी को एक समान बताया है
फिर भी बेटी के जन्म पर क्यूं उदासीन होती है।
उसे अपनी ही कोख से जन्म देकर माता फूट-फूट कर रोती है।
एक विद्वान से पूछा तो बोले विचार तो है बहुत महान,
बेटा-बेटी एक समान।

बेटियों की कोख में ना मरवाओ।
इस दुनिया में उन्हें खुशियों के साथ लाओ
करेगा अगर नाम रोशन बेटा तो बेटियां भी कर सकती है
पहाड़ों और दरियां में खेली
आसमां तक जा सकती है।

'बिश्नोई समाज' में बेटा-बेटी को एक समान दर्जा मिलता है, इसलिए खुद के 'बिश्नोई' होने पर गर्व करता है।

सुमित कुमार भाम्भू
गांव नाढ़ोडी, फतेहाबाद

जीवन में नया प्रकाश

हमें निराश नहीं होना चाहिए। बार-2 प्रयत्न करना चाहिए। हमें सफलता अवश्य मिलेगी। सब की बात मानें और अपने मन की करे। धनवान कौन है, अपने हाथों से कमाया धन सबसे बड़ा धन है। नेकी और इमानदारी से कमाया धन करोड़पति से अधिक है। बेईमानी से कमाया धन बाद में दुख देता है।

कोई छोटा या बड़ा नहीं है, एक बीज बड़ा पौधा बना देता। इसी प्रकार ज्ञान बढ़ता रहता है। आज के समय में भूतों, आडम्बरों, पितरों की पूजा की जाती है। विष्णु भगवान की पूजा करनी चाहिए जिससे युक्ति-मुक्ति मिलती है। श्रीश्री 108श्री गुरुजम्भेश्वर भगवान द्वारा बताये मार्ग पर चल करके अपनी जिंदगी संवारे। झूठे आडम्बरों में मत पड़ो। गुरु जम्भेश्वर भगवान ही विष्णु भगवान है। हमें विष्णु भगवान की अराधना करनी चाहिए। आज भारतीय संस्कृति में पश्चिमी संस्कृति प्रवेश कर गई है। मेरा आप सभी भाई बहनों से अनुरोध है की पश्चिमी संस्कृति छोड़कर भारतीय संस्कृति अपनाएं, हमारा भला होगा।

राजाराम
गांव जंडवाला बिश्नोई, मण्डी डबवाली, सिरसा

धर्म क्या है?

धर्म की परिभाषा : धर्म उसे कहते हैं जो शरीर धारण करने वाले की रक्षा करे। दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि प्रकृति के कुछ नियम व सिद्धान्तों को धर्म कहते हैं। इस संसार में धर्म दो स्वरूप में पाए जाते हैं-

1. **व्यवहारिक धर्म** - इस दुनिया में रहते हुए दूसरे प्राणियों पर दया करना व दूसरों की मदद करना व्यवहारिक धर्म कहलाता है।
2. **परमार्थिक धर्म** - अपने को सत्य में स्थित जानना व जगत को मिथ्या या असत्य समझना परमार्थिक धर्म कहलाता है। रामचरित् मानस में लिखा है 'धर्म व दूसरा सत्य समाना, आगम निगम पुरान बखाना।'
3. **धर्म का उद्देश्य** - धर्म का उद्देश्य समस्त दु:खों की निवृत्ति तथा परमानन्द की प्राप्ति है। इसको हम इस तरह भी समझ सकते हैं कि धर्म का कार्य हमें किसी बन्धन में डालने का न होकर वरन् स्वतन्त्र करना होता है। जबकि समस्त संप्रदाय व्यक्ति को बन्धन में डालते हैं तथा मानव को संकीर्ण सोच प्रदान करते हैं। तथा हर संप्रदाय का संस्थापक कोई न कोई व्यक्ति होता है और वह अपने नियम दूसरों पर जबरदस्ती थोंपता है तथा व्यक्ति की आजादी का हनन करता है। संप्रदाय व्यक्ति को तोड़ने का कार्य करता है। धर्म व्यक्ति व समस्त समाज को जोड़ता है, धर्म हमें जीवन जीने का रहस्य बताता है। जबकि संप्रदाय मिथ्या धारण में जीवन बर्बाद करता है। पाँच तत्व, तीन गुण, सात धातु तथा पांच ज्ञान इन्द्री, पाँच कर्म इन्द्री व एक मन, बुद्धि व अहम या आज भी वैसा ही है। सृष्टि के आदि में हर प्राणी सुख चाहता है या आज भी सुख चाहता है तथा भविष्य में भी सुख चाहेगा।

राजाराम राहड़
गांव जडवांला बिश्नोईयां, सिरसा

प्रभु भक्ति बिन जीवन सूना

मनुष्य इस ब्रह्माण्ड की सर्वोत्कृष्ट कृति है। यह मानव शरीर प्रभु प्रदत्त एक अद्‌भुत यंत्र है। सभी शास्त्रों ने इस शरीर को धर्म का मुख्य साधन स्वीकार किया है। यही वह पवित्र रथ है जिस पर सवार होकर आत्मा धर्म-अर्थ-काम को प्राप्त करता हुआ अपने अंतिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करता है। यह दिव्य यंत्र मानव शरीर पूर्व जन्म के पुण्य कर्मों का फल है। किसी कवि ने इसी भाव को निम्न शब्दों में प्रकट किया है-

पूर्व जन्म के सुकृत सहस्रों, होते हैं जब एक तीर।
पाता है तब मनुज मनोहर, मानव का यह रूचि शरीर॥

वेद ने भी इस शरीर की विशिष्टता बताते हुए कहा है कि- **'सुत्रामाणं पृथ्वीं दैवीं नावम्'** अर्थात् यह मानव शरीर एक दिव्य नौका है, जिसमें बैठकर संसार सागर को पार किया जाता है।

ईश्वर ने मनुष्य को यह उत्तम चोला देकर तथा विवेकशक्ति से सुसज्जित करके इस संसार में भेजा है। इसलिए प्रभु भक्ति मनुष्य का सर्वप्रथम नैतिक कर्त्तव्य है। जो मनुष्य अपने सांसारिक कर्मों को पूरी निष्ठा के साथ करता हुआ नित्यप्रति उस ईश्वर की भक्ति (उपासना) करता है वह नर सौभाग्यशाली है। प्रभु भक्ति ही संसार रूपी महासागर में मनुष्य का सर्वोपरि आश्रय है। उस ईश्वर ने यह दृश्य संसार समस्त भौतिक साधनों से युक्त करके मनुष्य के उपभोग के लिए बनाया है। संसार में रहने के लिए जिन प्राकृतिक पदार्थों की आवश्यकता है वे ईश्वर ने ही प्रदान किए हैं। वह इस सृष्टि के कण-कण में विराजमान होकर समस्त जड़ तथा चेतन पदार्थों को संचालित कर रहा है।

वेदों, उपनिषदों तथा अन्य आध्यात्मिक ग्रंथों ने भी मनुष्य को उस प्रभु की भक्ति करने का संदेश दिया है। मुण्डकोपनिषद के एक मंत्र का भाव देखिए-

'ओमित्येवं ध्यायथ आत्मानं स्वस्ति
च पाराय तमसः परस्तात्॥'

अर्थात् उस ओ३म् (प्रभु के नाम) का ध्यान करो अपने कल्याण का तथा अज्ञान रूपी अंधकार से पार होने का यही साधन है।

परन्तु दुःख की बात है कि आज का मनुष्य भौतिकवाद, भोगवाद की दलदल में इतना धंस चुका है उसे सर्वत्र केवल धन ही नजर आता है। भौतिक पदार्थों की तृष्णा ने मनुष्य को आध्यात्मिक पथ से हटाकर अशांति, चिंता, तनाव, भय तथा असंतोष, लोभ इत्यादि मानसिक व्याधियों से ग्रसित कर दिया है। केवल भौतिकवाद के मार्ग का अनुसरण विनाश का प्रतीक है। इसलिए मनुष्य को भौतिकवाद के साथ-साथ आध्यात्मवाद की ओर भी अपना मार्ग प्रशस्त करना चाहिए। यह मार्ग प्रभु शक्ति (उपासना) का पवित्र मार्ग है। यही वह पथ है जो मनुष्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक शांति तथा आनन्द की प्राप्ति करवा सकता है।

वेदादि शास्त्र संसार के ताप से तपे हुए लोगों को शिक्षा देते हुए कह रहे हैं कि-

"भवतापेन तप्तानां योगो हि परमसाधनम्" अर्थात् तुम्हारे दुखों, क्लेशों को दूर करने की औषधि केवल योग अर्थात् प्रभु की उपासना ही है। योग अर्थात् प्रभु के साथ अपने आपको मिला देना यही कल्याण का सबसे बड़ा साधन है। प्रभु भक्ति ही सर्वश्रेष्ठ आश्रय है, यथा-

"धमार्थकाममोक्षाणां ज्ञानवैराग्ययोरपि।
अंतःकरण शुद्धिश्च भक्तिर्हि परं साधनम्॥"

अर्थात् धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष इन सबको पाने का साधन भक्ति ही है। ईश्वर भक्ति से ही मनुष्य को आत्मिक बल, बुद्धि, सद्‌प्रेरणा, शाश्वत सुख की प्राप्ति होती है। इसलिए पूर्ण समर्पण से उस ईश्वर की भक्ति अत्यन्त अनिवार्य है। बिना ईश्वर स्तवन के यह मानव जीवन सुनसान तथा सूने से बगीचे की तरह हो जाता है। तो आइए भगवद् भक्ति के द्वारा इस मानव जीवन को सद्‌गुणों की सुगन्धी से महकता पावन बगीचा बनाएं।

दीपचन्द शास्त्री (अध्यापक)
दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय, हिसार

क्या बिना जीव हत्या खुशियों को पंख नहीं लगते

आइये हम रूबरू होते हैं खुदा के उन बन्दों से जिन्होंने अमन और शांति के पैगाम को हिंसा और अपनी कटुक भावनाओ से परे समझा.... सहसा मैंने ही पूछ ही डाला कि दोस्त क्या कोई खुशी का दिन बिना जीवं हत्या के नही मनाया जा सकता, तो उसने बड़ा अजीब जवाब दिया की आज भगवान या खुदा जो कहे वो हमें करना चाहिए या नहीं.... तो मैंने बोल दिया की क्यों नहीं वो तो जरुर करना चाहिए।

एक बार तो मैंने सोचा की कुछ सही बताएगा लेकिन जब उसने कहा की हमारे खुदा यह कह के गये हैं कि हमें खुशी के वक्त यह सब करना चाहिए....

तो मैंने कह दिया कि यह कौन सी धार्मिक पुस्तक गीता, कुरान या बाइबिल में लिख रखा है.... तो उसने कहा कि यह सब हमारी धार्मिक पुस्तक में लिखा है और उसने मुझे दो तीन पंक्ति भी सुनाई जिसमें कुर्बानी का कहा गया है.... तो मैंने कह ही दिया कि मूर्ख यह तो कुर्बानी का कहा है और जीव हत्या का तो कहीं नामोनिशान भी नहीं है.... तो मेरे कहने का मतलब यह ही है कि हमें मांस, मदिरा का सेवन किसी खुशी के मौके पर भी नहीं करना चाहिए.... और जो दुर्जन लोग इस कर्म के पीछे खुदा या भगवान को दोषी ठहरा रहे हैं.... वो अपनी अज्ञानता से पर्दा हटा लें तो ही अच्छा है.... वरना मान ही लो कि अगला जन्म उसी योनी में मिलना है जिसकी आप हत्या कर रहे हैं।

एक बड़ी दुर्दशा अभी अभी सामने आई है कि उत्तर प्रदेश की सरकार ने 15 गऊ हत्या के कारखानों को स्वीकृति प्रदान की है जो कि एक दिन में करीबन 1,50,000 गऊओं की हत्या का कुकर्म करेगा.... इसमें समाज के लोगों को विरोध करना चाहिए.... और सही बात मुझे इसमें यही नजर आती है कि इसमें सरकार अपने स्वार्थ के लिए ही यह सब स्वीकृति दे रही हैं.... वरना वो इसे रुकवा भी सकती हैं....

यू.पी. में 8 अत्याधुनिक कत्लखाने के लिए जो टेंडर मंगवाए हैं उसमें ऐसी मशीनों का प्रयोग होगा जो 1 दिन में हजारों मवेशियों की 'हत्या' करेगी। एक ऐसी मशीन है जिसमें पशु को एक संकरी गली में घुसेड़ा जाता है और आखिरी सिरे पर एक दर्पण होता है मवेशी उसे छूने के लिए जैसे ही अपना सिर अंदर करता है मशीन उसकी गर्दन को जकड़ लेती है और तुरंत उसका सिर धड़ से अलग हो जाता है।

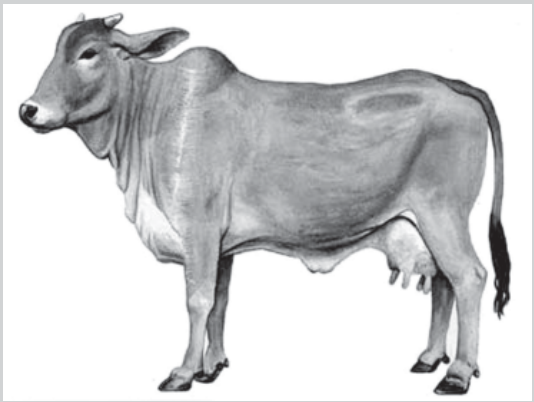

क्या आपको पता है कि उत्तर प्रदेश में 15 कत्लखाने खोलने की अनुमति सरकार ने दी है? जहां एक कत्लखाने में एक दिन में 10000 (दस हजार) जानवरों को काटा जाएगा तो एक दिन में 15 कत्लखानों में 1,50,000 जीवों की हिंसा होगी। अगर आप जीव दया प्रेमी हैं तो इस आन्दोलन को इतना विस्तार दो कि सभी इसके समर्थन में खड़े हो जाएं और सरकार को अनुमति वापस लेनी पड़े (अहिंसा परमो धर्म) (मानो या ना मानो)

(उत्तरप्रदेश सरकार के इस निर्णय को और अधिक डिटेल में पढ़ने के लिए log on करें: http://www.thebhaskar.com/2011/11/15.html)

एक बात सोचने की है कि अगर इन्सान मांस खाना बंद कर दे तो फिर यह जीव हत्या किसके लिए होगी.... सो एक ही पैगाम दुनिया भर में फैला दो दोस्तों.... बस जीव हत्या नहीं होनी चाहिए....

बिश्नोई समाज तो एक पवित्र धार्मिक समाज है सो हमें तो कम से कम दूसरे लोगों को जीव हत्या के कुमार्ग से दूर करना ही होगा। यह हमारे समाज के हर इन्सान का कर्त्तव्य बनता है....

मुझे किसी इन्सान, जाति या धर्म से नफरत नहीं लेकिन मुझे नफरत है तो केवल उन दुनिया के दुश्मनों से जो अशांति का पैगाम दुनियां में फैला रहे हैं और जीवों की हत्या का दुष्कर्म कर रहे हैं।

सुरेश कुमार बिश्नोई 'निश्चय'
बालोतरा, राजस्थान

मृत्युभोज : कैसी उल्टी रीति?

मर जाने वाले के गम में
दु:ख से व्याकुल घर के सारे
भाई बन्धु शोक मग्न हो
आंसू ढलकाते बेचारे

प्रियतम के जाने के गम में
दु:ख से कातर रोवे नार
रो-रो करके आंखें सूजी
उजड़ गया उसका संसार

घर गृहस्थी की गाड़ी खींची
संघर्षों से जोड़ी माया
अपने सब पुत्री-पुत्रों को
पढ़ा लिखा सुयोग्य बनाया

उंगली पकड़-पकड़ कर उसने
अपनों को चलना सिखलाया
अपना बुना ताना-बाना
छोड़ आज वो स्वर्ग सिधाया

उसके किए अहसानों की
आती याद नैन भर आते
जुगत भुलाने की करते पर
फिर भी उसको भूला न पाते

रह-रह याद सताती उसकी
सिसक-सिसक कर रोते जाते
उमड़ रहे दु:ख के सागर से
झर-झर आंसू झरते जाते

दु:खियों की पीड़ा से व्याकुल
जो नर उनसे मिलने जाते
उनके अपने बन करके वे
दु:खियों का संताप मिटाते

दारुण दु:ख की इस बेला में
भले वही जो सुख पहुंचाते
शोक वेदना में व्याकुल को
विविध भांति नियति समझाते

घर में रोने की चीत्कारें
दिल के तारों को विदारे
लेकिन मीठा खाने वाले
हलवा खाए ले चटखारे

दु:खियों की पीड़ा से उल्टा
हो रहा कैसा उत्कोच?
शोक मग्न से मिलने वाले
माल उड़ाए मृत्युभोज

दिल में उठे फफोले के जो
जख्म आज आकर सहलाते
उनको देखा आज उसी घर
हलवा मीठा माल उड़ाते

जग की कैसी उल्टी रीति?
बड़ों बड़ों के मन भरमाए
दु:खियों के हाथों पकवाकर
हलवा पूड़ी भोज उड़ाए

मिलने जाने से पहले वे
अपने घर से खाकर जाए
उल्टी रूढ़ि के चक्कर को
बार-बार यूं ना दोहराए

भोजन वही पुण्य का हेतु
जिसे खिलाए हेत पियार
दु:खी जनों से भोजन पाना
कैसा होता करो विचार?

रामकिशन डेलू
महासचिव, जीव रक्षा संस्था, बीकानेर (राज.)

माँ

हमारे शास्त्रों ने कहा है कि स्वर्ग भले ही आसमान के ऊपर हो पर स्वर्ग का सुकुन माँ के चरणों में प्राप्त होता है। दुनिया के तमाम मंत्र जप लो सारे मंत्र निष्फल हो जाते हैं अगर आप अपने माँ-बाप की सेवा नहीं कर सकते। मैं कहती हूं कि दुनिया का दिल जीतने वालों अपने परिवार का दिल जीतो स्वर्ग वहीं होगा। जो सास बहू और बेटी में भेद करती है वह अच्छी सास नहीं हो सकती। घर में अगर शांति नहीं है तो वह बाहर ढूंढने से नहीं मिलेगी। अशांत चित में भगवान भी बैठना पसंद नहीं करते, मरने के बाद शांत होना मजबूरी है, जीते जी शांत रहना ही जीवन की साधना है। समाज सेवा की शुरूआत अपने घर से करो फिर दूसरों की सेवा करो फिर तो गुरु जम्भेश्वर ने भी कही थी कि "पहले क्रिया आप कमाइये फिर औरन फरमायो"। माँ-बाप से बेटी भी अलग होती है लेकिन जब बेटी विदा होती है तो माँ-बाप के आंसुओं में संतुष्टि और सुकुन होता है और जब बेटा मुँह फेर लेता है तो उनके आंसुओं में बेवफाई की पीड़ा होती है। जीवन में कैसा भी क्षण आए लेकिन माँ बाप से कभी भी अलग न होना क्योंकि वे उस समय हमारे संरक्षक थे जब हमें कुछ नहीं आता था हम असहाय थे आज जब वे असहाय है तो हमें उनका पूरा ध्यान रखना चाहिए। दुनिया में सबसे पहला रिश्ता माँ से शुरू होता है क्योंकि हर रिश्ता छोटा होता है क्योंकि सारे रिश्ते जन्म के बाद बनते हैं। जितना कष्ट माँ उठाती है उतना कोई दूसरा नहीं उठाता। एक माँ अपने बच्चे को दूध पिलाती है सूखे में सुलाती है व खुद गीले में सोती है। आप सोचो ये कैसी विडंबना है, ये कितनी दयालु है, माँ ने साथ सोकर भी धोखा नहीं दिया और जब हम बड़े होकर मुंह फेरते हैं तो उन्हें कितना दुख होता होगा। इसलिए माँ बाप के लिए सोचो, इन्सान सोचो।

साधु महात्मा कहते हैं कि जिन्दगी के तीन आयाम होते हैं बचपन, जवानी और बुढ़ापा। जब बुढ़ापा बिगड़ता है तो परमात्मा सुधार देते हैं। एक अक्षर 'माँ' दुनिया की समस्त वर्णमालाओं व शब्दकोशों से बढ़कर है। माँ से बड़ी कोई यूनिवर्सिटी नहीं है। बच्चों को माँ कहना सिखाओ क्योंकि माँ शब्द में ममता समाहित है। माँ एक ऐसा आशीष है जो हर विपदा में हमारे साथ रहता है। मुनियों ने कहा है कि मूर्ति बनाने वाला कारीगर पत्थर की मूर्ति बनाता है और उसकी तुम पूजा करते हो। तुम उसकी पूजा करो जिसने तुम्हें बनाया है। मुनियों ने कहा कि पेड़ बूढ़ा ही सही आंगन में लगा रहने दो फल नहीं छाया तो अवश्य देगा। इसी तरह अगर माँ-बाप बूढ़े हो गए हैं तो वे घर की रखवाली जरूर करेंगे। आपको अपना फर्ज निभाना चाहिए ये आपका हक है और मेरी अंत में आपसे यह विनती है अपने माँ-बाप को 'मम्मी' या 'डैडी' कहकर न पुकारें। उन्हें इज्जत से माताजी-पिता जी कहकर पुकारें।

परमेश्वरी देवी पूनिया
लिखमेवाला, गंगानगर (राज.)

गम को बदलो खुशी में

फूल बनकर मुस्कुराना सीख लो
हंस कर गम भूलाना सीख लो
गम में अगर जीते रहे तो जी ना पाओगे
सहारा लेना खुशी का हमेशा मुस्कुराओगे
गम है साथी अपना हरदम साथ निभाता है
खुशी का मेला तो पल दो पल के लिए आता है
गम को अगर खुशी में तुमने बदलना सीख लिया
तो समझना,
जिन्दगी को हंस कर जीना सीख लिया
आज की इस दुनिया में गम ही गम है
गम सहन करने के लिए हुआ हमारा जन्म है
गम को बदल दे खुशी में वही इन्सान है
सच पूछो तो वो इन्सान ही खुदा समान है।

सरिता लाम्बा, कालवास, हिसार

पत्रिका मिली

संभराथल धारा

पत्रिका : **संभराथल धारा** प्रकाशक : **गुरु जंभेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान,**
सम्पादक : **डॉ. किशनाराम बिश्नोई** गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी वि.वि., हिसार
प्रकाशन अवधि : **त्रैमासिक** शुल्क: **1 प्रति 100 रु., वार्षिक- 300 रु., पंचवर्षीय-1300 रु., आजीवन- 5000 रु.**

गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार आज एक अग्रणी विश्वविद्यालय के रूप में प्रतिष्ठित है। यह विश्वविद्यालय विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में दिन प्रतिदिन आगे बढ़ रहा है। इस विश्वविद्यालय की यह विशेषता है कि यहां विज्ञान के साथ-साथ धर्म व दर्शन का अध्ययन भी हो रहा है। यहां तुलनात्मक धर्म दर्शन व गुरु जाम्भो जी के सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार एवं अध्ययन हेतु एक पृथक संस्थान है- गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान।

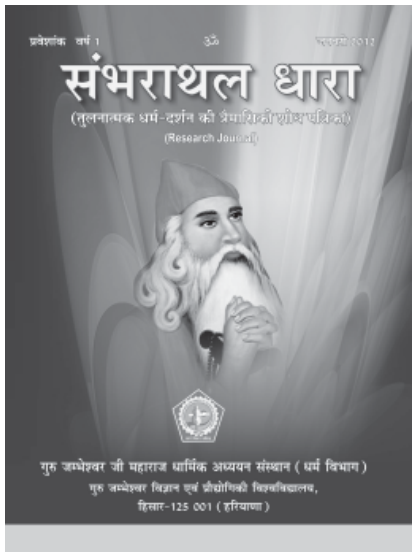

अत्यंत हर्ष का विषय है कि तुलनात्मक धर्म दर्शन एवं गुरु जाम्भो जी के सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार हेतु इस संस्थान ने एक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया है। पत्रिका का प्रवेशांक जनवरी 2012 में निकला है। पत्रिका का नामकरण अत्यन्त सार्थक व आकर्षक है- 'संभराथल धारा'। संभराथल ही वह स्थान है जहां से ज्ञान की धारा प्रवाहित हुई थी। यहीं पर गुरु जाम्भो जी ने 51 वर्ष तक ज्ञानोपदेश दिया था। संभराथल पर दिए गए ज्ञान को ही दुनिया में प्रचारित-प्रसारित करना इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है, इसलिए यह नाम अत्यन्त ही सार्थक व संदेशात्मक है।

पत्रिका के सम्पादकीय मण्डल एवं सलाहकार समिति में पूरे भारतवर्ष से प्रख्यात विद्वानों को रखा गया है। पत्रिका के प्रवेशांक में 14 शोधपत्र प्रकाशित हुए हैं जो अत्यन्त ही शोधपरक, स्तरीय व ज्ञान वर्धक है। इस पत्रिका में डॉ. ईश्वरशरण विश्वकर्मा, डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी, डॉ. देवी सिंह राणा, डॉ. राकेश अग्रवाल, डॉ. सुरेश वर्मा, डॉ. श्याम मनोहर व्यास, डॉ. रामस्नेही लाल शर्मा, डॉ. परशुराम शुक्ल, डॉ. विभा शुक्ल, डॉ. सुरेन्द्र कुमार, डॉ. रज्जन कुमार, पटेल सिंह, डॉ. किशनाराम बिश्नोई व श्रीमती अंजू रानी के शोधपत्र प्रकाशित हैं। जिनमें ऋषि परम्परा, भक्ति काव्य, भारतीय संस्कृति, पर्यावरण रक्षा, धर्म का स्वरूप, नैतिकता आदि विषयों पर गंभीर विमर्श प्रस्तुत किया गया है।

सभी लेख गरिमापूर्ण शैली में लिखे गए हैं। संपादक महोदय ने सद्विवेक से इस अंक को प्रस्तुत किया है। अपने नाम के अनुरूप ही यह पत्रिका ज्ञान की धारा है। पत्रिका का आवरण अत्यन्त ही आकर्षक है। मुद्रण व कागज भी उच्च स्तरीय है। आशा है यह पत्रिका भविष्य में शोध के क्षेत्र में एक नया आयाम स्थापित करेगी। सम्पादक महोदय व विश्वविद्यालय प्रकाशन इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए साधुवाद के पात्र हैं।

डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई
सहायक प्रोफेसर, दयानन्द महाविद्यालय, हिसार

हलचल

हरियाणा में हिरणों का शिकार: बिश्नोई समाज में रोष

हिसार : पन्द्रहवीं शताब्दी में गुरु जाम्भोजी ने 29 धर्म नियमों की आचार संहिता का निर्माण करते समय निरीह जीवों का विशेष ध्यान रखा था। पूज्य गुरुवर ने 'जीव दया पालणी' को अपने धर्म-नियमों में समादर दिया था, क्योंकि इन निरीह जीवों पर हिंसक पशुओं के साथ-साथ शैतान मनुष्य की कुदृष्टि सदैव बनी रहती है। पिछली पांच शताब्दियों में बिश्नोई समाज ने यथाशक्ति इन निरीह जीवों की रक्षा की है। इसी का परिणाम है कि आज लुप्त होते हिरण केवल बिश्नोइयों की आबादी वाले क्षेत्रों में ही मिलते हैं। इन हिरणों की जान को केवल शिकारियों से ही नहीं अपितु मांसाहारी कुत्तों से भी बड़ा खतरा रहता है। हरियाणा में हिरणों के लिए नए वर्ष का आगाज़ शुभ नहीं रहा। नए वर्ष के प्रथम माह में ही हिरणों की हत्या एवं शिकार की इतनी घटनाएं घटित हुई कि हर जीव प्रेमी का दिल दहल उठा।

हिरणों पर आफत का यह सिलसिला 10 जनवरी, 2012 को शुरू हुआ। 10 जनवरी को अंधेरी रात में आदमपुर गांव के खेत में दुर्दांत शिकारियों ने गोली मारकर एक निरीह हिरण की हत्या कर दी। प्रात: होने पर कुछ बिश्नोई बन्धुओं ने जब यह कुकृत्य देखा तो इसकी सूचना जीव रक्षा सभा व वन्य जीव रक्षा विभाग को दी। अभी इस हिरण की हत्या के सदमे से बिश्नोई समाज उभरा भी नहीं था कि 11 जनवरी को शिकारी कुत्तों ने एक और हिरण की हत्या कर दी। 15 जनवरी को आदमपुर गांव के खेतों में एक और हिरण मृत मिला।

17 जनवरी को प्रात: 10 बजे सदलपुर गांव अज्ञात शिकारियों ने फायर करके एक माता गर्भवती हिरण को झुण्ड से अलग कर दिया। फायर का शोर सुनकर खेत में पानी लगा रहे नरसिंह बिश्नोई फायर की दिशा में गए तो वहां से अज्ञात शिकारी भाग चुके थे। इसके बाद जैसे ही वे अपने खेत के पास गए तो चार-पांच कुत्ते एक हिरण के पीछे लगे हुए थे। जब तक कुत्तों को वहां से खदेड़ा गया तब तक वे मादा हिरण को घायल कर चुके थे। इसके बाद घायल अवस्था में हिरण को आदमपुर के पशु अस्पताल लाया गया। वहां पर चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। बाद में मृत हिरण को गऊशाला में दफनाया गया।

18 जनवरी को आदमपुर गांव में ही पांच-छह शिकारी कुत्तों ने मिलकर एक नीलगाय के बच्चे को घायल कर दिया। जिसे ग्रामवासियों ने आदमपुर चिकित्सालय में भर्ती करवाया जहां पर उसने दम तोड़ दिया।

सिरसा जिले के जण्डवाला बिश्नोइयान गांव में भी काले हिरण की संदिग्ध हालात में मौत हो गई। जिसे ग्रामीणों ने दफनाया। माना जाता है कि इस क्षेत्र में शिकारी कुत्तों के काटने व अन्य बीमारियों से लगभग 4 हिरणों की मौत हो चुकी है।

आदमपुर और सिरसा के बाद फतेहाबाद जिले के झलनियां गांव में भी दो शिकारियों ने रविवार 22 जनवरी को एक हिरण को गोली मार दी। गोली की आवाज सुनकर नजदीक ढाणी से एक युवक अनूप कुमार खेत की ओर दौड़ा तो दोनों शिकारी फरार हो गए। तड़पते हिरण को ग्रामीण तत्काल गौशाला ले गए। लेकिन उसे बचाया नहीं सका। अनूप कुमार ने हिरण को गोली लगी देखकर शिकारियों को पकड़ने की कोशिश भी की परन्तु वह सफल नहीं हो सका। उसने तुरन्त पवन, विजयपाल, अजय मांझू, कपिल को सूचित किया। सभी मिलकर घायल हिरण को उपचार के लिए फतेहाबाद ले गए परन्तु उसे बचाया नहीं जा सका।

उपर्युक्त सब घटनाओं से पूरे बिश्नोई समाज में रोष की लहर फूट पड़ी। समाज के प्रबुद्धजनों ने

स्थान-स्थान पर बैठकें कर प्रशासन व शिकारियों को चेतावनी दी कि हिरणों की हत्या तुरन्त बंद हो, नहीं तो बिश्नोई समाज प्रशासन व शिकारियों के विरुद्ध आन्दोलन करेगा।

20 जनवरी को बिश्नोई सभा, हिसार की एक आपात बैठक हुई जिसमें हिरणों की हो रही हत्याओं पर गहरा दुख व रोष प्रकट किया गया। बिश्नोई सभा, हिसार के प्रधान श्री सुभाष देहडू ने कहा कि समाज एक होकर हिरणों की सुरक्षा के लिए कोई कसर नहीं छोड़ेगा। यदि प्रशासन नहीं जागा तो वे आन्दोलन करने को मजबूर हो जाएंगे। उन्होंने कहा कि समाज के लोग गांव में ठीकरी पहरा देकर हिरणों की रक्षा करेंगे। बिश्नोई जीव रक्षा सभा के प्रदेशाध्यक्ष कामरेड रामेश्वर डेलू ने भी प्रशासन को चेतावनी देते हुए कहा कि यदि हिरणों की हत्या पर रोक नहीं लगी तो वे धरना देंगे तथा अपने स्तर पर हिरणों की रक्षा करेंगे। बिश्नोई सभा, हिसार के उपाध्यक्ष कृष्ण राड़ ने भी आदमपुर के साथ-सथ अन्य जिलों में भी हो रही हिरणों की हत्या पर चिंता प्रकट की। बिश्नोई सभा, हिसार ने इस बाबत जिला उपायुक्त को एक ज्ञापन भी दिया।

बिश्नोई समाज द्वारा प्रकट किए गए रोष के परिणामस्वरूप प्रशासन जागा और मेरठ से शिकारी कुत्तों को पकड़ने के लिए एक दल को बुलाया गया। यह दल आदमपुर क्षेत्र में शिकारी कुत्तों को पकड़कर अन्य स्थानों पर छोड़ रहा है। 10 जनवरी को आदमपुर में हुई हिरण के हत्या के आरोप में राजस्थान के भनाई गांव में रहने वाले बावरी समाज के एक व्यक्ति पालाराम के खिलाफ हत्या का केस दर्ज किया गया है।

6 हिरणों की मौत के बाद जागा प्रशासन

आला अधिकारी पहुंचे आदमपुर, बिश्नोई समाज के साथ की बैठक

आदमपुर क्षेत्र में एक के बाद एक हो रही हैं मौतें

हिरणों के अस्तित्व पर संकट

टोपीदार बंदूकों से निशाना

आपात बैठक करके जान

50 शिकारी कुत्ते हिरणों के दुश्मन

कुत्तों को पकड़ने के लिए उपायुक्त को लिखा पत्र

हिरणों की मौत पर खोला मोर्चा

वन्य प्राणी विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक में विश्नोई समाज ने कहा, हम बचाएंगे हिरण

हिरण बचाओ नहीं तो आंदोलन

क्या कहते हैं डिविजनल ऑफिसर

सहयोग न मिला तो आंदोलन

प्रदेश के काले हिरण फिर शिकारियों के 'निशाने' पर

प्रदेश में हिरणों की संख्या घट रही है लगातार, विभाग करवाएगा अप्रैल माह में हिरणों की गिनती

प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन

श्रीगंगानगर : अखिल भारतीय बिश्नोई युवा संगठन की ओर से 25 से 31 दिसम्बर को जाम्भाणी हरिकथा ज्ञान यज्ञ व प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन श्रीगंगानगर जिला मुख्यालय पर स्थित बिश्नोई मंदिर पर किया गया। इस अवसर पर बिश्नोई युवा संगठन ने चेतना रैली निकाली। रैली की शुरूआत महन्त स्वामी श्री राजेन्द्रानन्द जी महाराज ने हरी झण्डी दिखाकर की। यह रैली बिश्नोई मंदिर से प्रारम्भ होकर शहर के प्रमुख मार्गों से होती हुई पुन: बिश्नोई मंदिर में जाकर विसर्जित हुई। रैल में समाज के प्रमुख नागरिक शामिल हुए तथा इसका शहर में अनेक स्थानों पर स्वागत किया गया।

मंदिर परिसर में आयोजित कथा का शुभारंभ श्री देवेन्द्र भादू एडिशनल एस.पी. रायसिंह नगर, मुकेश गोदारा पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष, सुभाष थापन जिला अध्यक्ष बिश्नोई युवा संगठन, शिवकुमार सहारण प्रधान बिश्नोई सभा श्रीगंगानगर दीप प्रज्ज्वलित कर किया। कथा के मुख्य अतिथि श्री रमेश राहड़ राष्ट्रीय अध्यक्ष अ.भा. जीव रक्षा बिश्नोई सभा थे। कथा में उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए श्री राहड़ ने कहा कि हमारा समाज आज किस दिशा में जा रहा है इस पर सोचने की जरूरत है। उन्होंने मातृशक्ति से आह्वान करते हुए कहा कि वे अपने बच्चों को स्नान करवाकर सुबह-शाम पूजा अर्चना के समय जरूर अपने पास बैठाएं ताकि समाज की जो परिस्थिति आज हुई है भविष्य में इस स्थिति में हमें दो चार न होना पड़े। देश के बच्चों को कर्णधार बताते हुए उन्होंने कहा कि आज आवश्यकता संस्कारित शिक्षा की है, तोता रटंत शिक्षा की नहीं। इस कथा में महन्त स्वामी श्री राजेन्द्रानन्द जी महाराज हरिद्वार ने कहा कि क्रोध व अग्नि की रीति एक जैसी है। 30 दिसम्बर को संगठन की ओर से पर्यावरण चेतना को समर्पित विशाल कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में कवियों ने पर्यावरण व इसके संरक्षण का संदेश देने वाली कविताएं पेश की। हवन पाहल कार्यक्रम के पश्चात प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता महन्त स्वामी श्री राजेन्द्रानन्द जी महाराज ने की। मंच पर अन्य अतिथियों के रूप में श्री देवेन्द्र भादू एडीशनल एसपी, रूपाराम बिश्नोई अधीक्षक अभियन्ता पी.डब्ल्यू.डी., आचार्य सुखानन्द जी, रामस्वरूप मांझू उपा. बिश्नोई महासभा, संदीप मांझू चेयरमैन कृ.उ. मण्डी समिति रिड़मलसर, सुशील बिश्नोई एक्स.इ.एन पी.डब्ल्यू.डी, शिव कुमार सहारण प्रधान बिश्नोई सभा, अलका बिश्नोई एस.डी.एम. मंचासीन थे। कार्यक्रम में शिक्षा क्षेत्र में 26, पर्यावरण क्षेत्र में 2, सामाजिक क्षेत्र में 2, धार्मिक क्षेत्र में 40, जीव रक्षा क्षेत्र में 7 व सरकारी सर्विस में चयनित 2 प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया।

पवन ज्याणी, जोड़कियां, श्रीगंगानगर

सत्यनारायण जोधपुर के जिला प्रभारी मनोनीत

सत्यनारायण सुपुत्र श्री बुधराम जी सोढ़ा, निवासी जैंसला, जिला जोधपुर को अखिल भारतीय जीवरक्षा बिश्नोई सभा के प्रदेश सदस्य एवं जिला-प्रभारी जोधपुर के पद पर मनोनीत किए गए हैं।

अनूप गोदारा बीजेपी पार्टी के यूपी चुनाव में कांठ विधानसभा के प्रेक्षक नियुक्त

सेवक दल के वरिष्ठ सेवक अनूप गोदारा, निवासी पीलीबंगा, हनुमानगढ़ बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन गड़करी द्वारा उत्तर प्रदेश चुनाव में कांठ विधानसभा क्षेत्र का प्रेक्षक नियुक्त किए गए हैं।

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

विक्रमी सम्वत् 2068 फाल्गुन की अमावस्या

लगेगी : 20.02.2012

सोमवार, रात्रि 3 बजकर 50 मिनट पर

उतरेगी : 21.02.2012

मंगलवार, रात्रि 4 बजकर 04 मिनट पर

विक्रमी सम्वत् 2068 चैत्र की अमावस्या

लगेगी : 21.03.2012

बुधवार, सायं 6 बजकर 37 मिनट पर

उतरेगी : 22.03.2012

बृहस्पतिवार, रात्रि 8 बजकर 6 मिनट पर

फाल्गुन अमावस्या मेला

मुकाम, सम्भराथल, पीपासर, लोहावट,
सोनड़ी, कांठ, मेघावा
21.02.2012 मंगलवार

चैत्र अमावस्या मेला

जाम्भोलाव, लोदीपुर
22.03.2012 बृहस्पतिवार

पुजारी : **बनवारी लाल सोढ़ा,** (जैसलां वाले)
मो.: **09416407290**

उन्नतीस धर्म नियम

- ★ तीस दिन सूतक रखना।
- ★ पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक रहना।
- ★ प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
- ★ शील का पालन करना व संतोष रखना।
- ★ बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
- ★ द्विकाल संध्या-उपासना करना।
- ★ संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
- ★ निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
- ★ पानी, ईन्धन और दूध को छानबीन कर प्रयोग में लेना।
- ★ वाणी विचार कर बोलना।
- ★ क्षमा-दया धारण करना।
- ★ चोरी नहीं करनी।
- ★ निन्दा नहीं करनी।
- ★ झूठ नहीं बोलना।
- ★ वाद-विवाद का त्याग करना।
- ★ अमावस्या का व्रत रखना।
- ★ विष्णु का भजन करना।
- ★ जीव दया पालणी।
- ★ हरा वृक्ष नहीं काटना।
- ★ काम, क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
- ★ रसोई अपने हाथ से बनानी।
- ★ थाट अमर रखना।
- ★ बैल बधिया नहीं कराना।
- ★ अमल नहीं खाना।
- ★ तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
- ★ भांग नहीं पीना।
- ★ मद्यपान नहीं करना।
- ★ मांस नहीं खाना।
- ★ नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

मुख्य अष्ट धाम

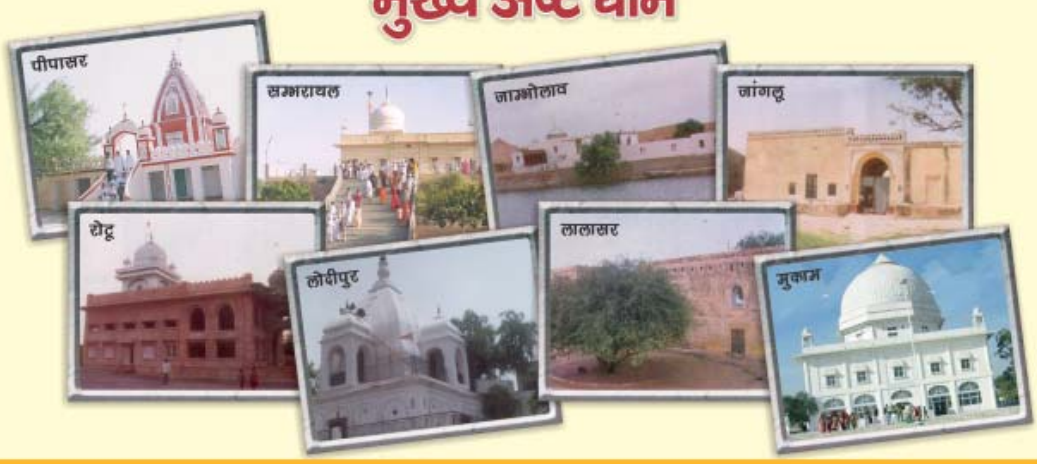

RNI No.: 12406/57

POSTAL REGD. NO.: L/Regd. NP/HSR/01/2011-2013
L/WPP/HSR/03/11-13

श्री जम्भवाणी सार भक्त तू निर्मल हृदय धार

★ विष्णु सर्वव्यापक है। वह सबके हृदयों में सदैव विराजमान रहता है। वह अपने भिन्न रूपों में ऐसे प्रकट होता है जैसे दूध में पानी और फूलों में पराग, वह चारों योनियों में, सप्त पातालों में, तीनों लोकों में, चौदह भुवनों में, नदियों में नीर रूप में, सागर में रत्न रूप में सदैव निरन्तर रूप में विद्यमान रहता है।

★ परम तत्त्व सबका सृजनकर्त्ता है। उसका रहस्य नहीं पाया जा सकता है। वह ताप और शीत से परे अथाह, गहन और वर्ण रहित है, उसे केवल अनुभव किया जा सकता है। अमृत के स्वाद की भांति उसके स्वरूप का वर्णन वाणी से संभव नहीं और न ही सागर में मछली के मार्ग की भांति उसका भेद पाया जा सकता है।

★ आवागमन से मुक्ति का साधन केवल विष्णु जप है। वह उतना ही शक्तिमान है जितने स्वयं विष्णु अथवा स्वयंभू। विष्णु का जप ही मूल तत्त्व है, इससे अमरत्व की प्राप्ति, जरा-मरण से छुटकारा और वैकुण्ठ वास मिलता है। इससे मृत्यु उपरान्त क्षण मात्र में मोक्ष की प्राप्ति होती है।

★ निश्चल और एकाग्र वृत्ति वाले व्यक्ति ही अमृत तत्त्व को पाते हैं। यदि हृदय पावन व पवित्र है तो अड़सठ तीर्थ और काबा उसी में है। मनुष्य को सदैव आडंबरहीन, सादगीपूर्ण एवं सदाचार युक्त जीवन जीना चाहिए।

★ हे मोहम्मद खान! ये संसार नश्वर है, इसमें स्थायी कुछ भी नहीं, पार्थिव वस्तुएं मिथ्या है इसलिए पार्थिव वस्तुओं का अहंकार नहीं करना चाहिए।

★ मानव देह पूर्व जन्मों के पुण्यों से प्राप्त होती है और मानव देह के इस पिंड से ही परमतत्त्व को प्राप्त किया जा सकता है। माली जैसे बाड़ी को सींचता है वैसे ही शुद्धाचरण से शरीर की रक्षा करनी चाहिए।

★ सद्गुण के बिना मुक्ति संभव नहीं। उसकी शरण बिना सुपथ नहीं मिलता और जीवन व्यर्थ जाता है। अत: गुरु कृपा से ही आत्मोपलब्धि संभव है क्योंकि गुरु जीवन मुक्त, कैवल्य ज्ञानी और अनन्तगुण सम्पन्न होता है।

★ वाद-विवाद, झूठ, अहंकार, निन्दा, द्वैत भावना, क्रोध, मोह तथा चोरी का सर्वथा त्याग करना चाहिए। बैल, गाय, भेड़-बकरी तथा वन्य प्राणियों आदि निरीह जीवों की हत्या नहीं करनी चाहिए। हरे वृक्ष नहीं काटने चाहिए।

★ अपनी कमाई का दसवां भाग दान में अवश्य देना चाहिए परन्तु दान सदा निष्काम भाव से सुपात्र को ही देना चाहिए। ऐसा दान ही अमृत फल देता है।

★ द्विकाल की संध्या, हवन-यज्ञ, तन और मन की पवित्रता, अमावस्या का व्रत, गुरुवाणी को मानना, सहज भाव से रहना और सुपथ पर चलना, संसार और कीर्ति के लोभ से दूर रहना आदि गुरु जम्भेश्वर के अमृत वचनों का सार है।

मुद्रक, प्रकाशक श्री सुभाष देहडू, प्रधान बिश्नोई सभा, हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 फरवरी, 2012 को प्रकाशित किया।